तित्थयर-णामत्थुदी

(तीर्थंकर नाम स्तुति)

ग्रन्थकार

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज

ग्रंथ -
तित्थयर-णामत्थुदी (तीर्थंकर नाम स्तुति)

मंगल आशीर्वाद
परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसन्त
श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्दजी मुनिराज

ग्रंथकार
परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी
आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज

सम्पादन - आर्यिका वर्धस्वनंदनी

संस्करण - प्रथम, 2021

प्रतियाँ - 1000

मूल्य - सदुपयोग

ISBN Number : 978-93-94199-01-9

प्राप्ति स्थान
निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला समिती
ई० 102 केशर गार्डन
सै० 48 नोएडा-201301
मो. 9971548889
9867557668

मुद्रण व्यवस्था
अलंकार प्रकाशन
टेली. न. 9310367802

सम्पादकीय

सुश्रद्धा मम ते मते स्मृतरपि त्वय्यर्चनं चापिते,
हस्तातञ्जलयेकथाश्रुतिरतः कर्णोऽक्षि संप्रेक्षते।
सुस्तुत्यां व्यसनं शिरोनति परं सेवेदृशी येन ते,
तेजस्वी सुजनोऽहमेव सुकृतिस्तेनैव तेजः पतेः।।

स्तुति विद्या, आ. समंतभद्र स्वामी

अर्थ–हे तेजपुंज अधिपति! मैं आपकी श्रद्धा में डूबा रहूँ, आपका अर्चनमात्र याद रहे, शेष सभी बात मैं भूल जाऊँ। मेरे कर अंजलिबद्ध होकर आपके समक्ष अकिंचन भाव का भक्ति नैवेद्य लिए रहें। कानों में आपकी पवित्र कथा सदैव सुनाई देती रहे और आँखें त्राटक सिद्ध होकर अनिमेषवृत्ति से आपके दर्शन का लाभ लेती रहें। हे देव! मुझमें किसी प्रकार का व्यसन न हो, अगर हो तो आपकी स्तुति का, भक्ति करने का व्यसन रहे एवं यह मस्तक आपके चरणों में सदैव झुकता रहे, ये मेरी भावनाएँ चरितार्थ हों। मैं आपके प्रताप से तेजस्वी सुजन व पुण्यवान् हूँ।

आत्मगिरी पर पड़ती हुई जिनभक्ति की अविरल धारा कर्मपंक को प्रक्षालित कर उसे स्फटिक सम निर्मल, उज्ज्वल, धवल बना परम शुद्ध करने में समर्थ होती है। जिस प्रकार चक्रवर्ती के चक्ररत्न के समक्ष मंडलेश्वर, महामंडलेश्वर आदि सभी नतमस्तक हो जाते हैं, उसी प्रकार जिनभक्ति रूपी चक्र के समक्ष निधत्ति व निकाचित जैसे कर्म भी गलित हो आत्म प्रदेशों से खिर जाते हैं। श्री तीर्थंकर प्रभु का गुण चिंतन, स्तोत्र, स्तुति, पूजा आदि तो दूर उनका नाम स्मरण भी

सहस्रों पापों का नाश करने वाला होता है। जिनभक्ति में निमग्न आचार्य भगवन् श्री मानतुंग स्वामी ने भी भक्तामर स्तोत्र में कहा है–

आस्तां तव स्तवनमस्त समस्त-दोषम्,
त्वत्सङ्कथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि॥9॥

अर्थ–हे भगवन् आपकी निर्दोष स्तुति तो दूर रही, आपकी चर्चा ही सारे जग के पापों का नाश करने वाली है। जब सूर्य की किरण ही सरोवरों में कमलों को प्रफुल्लित करने में समर्थ है, तब सूर्य के प्रभाव का क्या कहना?

सर्वे रोगभया सर्वे, सर्व दुःखस्य संतति।
सर्वज्ञ स्तोत्र मात्रेण, नश्यंत्यत्र न संशया॥

अर्थ–सभी रोग, सभी भय तथा सभी दुःखों की परम्परा सर्वज्ञ देव के स्तोत्र मात्र से नष्ट हो जाती है, इसमें कोई संशय नहीं है।

श्री भगवज्जिनसेनाचार्य ने भी कहा है कि हे भगवन्! आपके गुण अनंत हैं, उन सबका स्तवन तो कठिन है। अतः जिन नाम लेकर ही हम स्तुति करते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण भी अनादिकालीन पापों को क्षय करने में समर्थ होता है।

अलमास्तां गुणस्तोत्रमनन्तास्तावका गुणाः।
त्वां नामस्मृतिमात्रेण पर्युपासिसिषामहे॥33॥
एवं स्तुत्वा जिनंदेवं भक्त्या परमया सुधीः।
पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं पापशान्तये॥34॥

प्रस्तुत ग्रंथ '**तित्थयरणामत्थुदी**' (तीर्थंकर नाम स्तुति) के नाम से ही स्पष्ट है कि इसके अंतर्गत आचार्य महाराज ने तीर्थंकरों के नाम

उल्लिखित किए हैं। जंबूद्वीप संबंधी एक भरत, एक ऐरावत क्षेत्र, धातकी खंड संबंधी दो भरत व दो ऐरावत क्षेत्र तथा पुष्करार्द्ध संबंधी दो भरत व दो ऐरावत क्षेत्र; इस प्रकार ढाईद्वीप में 5 भरत क्षेत्र तथा 5 ऐरावत क्षेत्र पाये जाते हैं। इन क्षेत्रों की भूतकालीन,वर्तमान कालीन और भविष्यकालीन चौबीसी ग्रहण करने पर (10X3) तीस चौबीसी हो जाती है। तीस चौबीसी के सात सौ बीस तीर्थंकरों की नाम स्तुति इस ग्रंथ के अंतर्गत है।

नि:संदेह प्रतिदिन प्रात:कालीन बेला में ब्रह्ममुहूर्त में तीर्थंकरों के नाम का पाठ करने वालों के पाप कर्म उसी प्रकार क्षय को प्राप्त हो जाते हैं जिस प्रकार मार्तंड के उदय होते ही समस्त अंधकार विलीन हो जाता है।

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा लिखित यह ग्रंथ जिनशासन के प्रति समर्पित, आत्म कल्याण के इच्छुक जिन भक्तों के लिए अनुपम वरदान (उपहार) स्वरूप है। कर्म रूपी शत्रु से युद्ध करने वाले योद्धओं के लिए दिव्य अस्त्र रूप है। भव कूप से निकलने से इच्छुक भव्यों के लिए रज्जू स्वरूप है तथा संसार में अंध सम भटकते प्राणियों के लिए ज्योति स्वरूप है। जन्म-जरा-मृत्यु जैसे महारोगों से मुक्ति पाने वालों के लिए अमृतोपम औषधि स्वरूप है।

यथार्थ में आचार्य महाराज ने करुणा कर यह ग्रंथ रूप अनुपम निधि भव्य प्राणियों को सौंपी। ऐसे आचार्य महाराज के चरणों में हम कोटिश: नमन करते हैं एवं भावना भाते हैं कि मोक्षमार्ग में बाधक कारणों को दूर करने रूप सूत्रों से युक्त, संस्कृति व सभ्यता के

संरक्षक रूप, जिनशासन के माहात्म्य को प्रकट करने वाले, देश व धर्म को गौरवान्वित करने वाले, आत्मा के रसास्वादन हेतु रहस्यों को उद्घाटित करने वाले ग्रंथ जिस प्रकार अभी तक हमें प्राप्त हुए हैं, आगे भी इसी प्रकार प्राप्त होते रहें। जो संप्रति में तो जन-जन को लाभान्वित कर ही रहे हैं, आगे सहस्रों वर्षों तक भी इनके माध्यम से लोग जिनशासन की छत्रछाया पाकर निज संसार परिभ्रमण को अल्पावधि प्रदान करने में समर्थ होंगे।

प्रस्तुत ग्रंथ **'तित्थयर-णामत्थुदी'** के संपादन में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन उसे संशोधित कर पढ़ें, हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से ग्रंथाध्ययन करें। जन-जन के श्रद्धापुंज परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी महाराज का संयम, तप, ज्ञान व साधना का सौरभ सहस्रों वर्षों तक संपूर्ण विश्व को सुरभित करता रहे। गुरुवर श्री को आरोग्य लाभ हो एवं अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करें। परम पूज्य गुरुवर श्री के चरणों में सिद्ध-श्रुत-आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!.....।।

'जैनम् जयतु शासनम्'

श्री शुभमिति आश्विन कृष्ण बारस
श्री वीर निर्वाण संवत् 2547
रविवार, 03/10/2021
सिद्धक्षेत्र तारंगा जी, (गुजरात)

आर्यिका वर्धस्वनंदनी

तित्थयर-णामत्थुदी

आचार्य वसुनंदी जी महाराज प्राकृत भाषा में ग्रंथों का लेखन करते हैं। आपने प्राकृत लेखन की परंपरा को जीवंत किया है। हाल ही में आपके द्वारा लिखित 'तित्थयर-णामत्थुदी' (तीर्थंकर नाम स्तुति) ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है। यह ग्रंथ प्राकृत साहित्य की अमूल्य निधि के रूप में साहित्य परम्परा को वृद्धिंगत करेगा। प्रस्तुत ग्रंथ के प्रारंभ के पद्यों में ही तीर्थंकरों की वंदना की गई है। आचार्य श्री द्वारा लिखित प्राकृत ग्रंथों में व्यवहारिक व आध्यात्मिक विषयों के साथ जीवन मूल्यों का भी सुंदर वर्णन है। इस ग्रंथ में 138 पद्य हैं। जैन धर्म में तीर्थंकरों की परंपरा बहुत ही प्राचीन है। इस प्राचीन परंपरा का ज्ञान हमें पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी कृत तित्थयर-णामत्थुदी ग्रंथ से प्राप्त हो सकता है।

–डॉ. आशीष जैन

बम्होरी, म.प्र.

तित्थयर-णामत्थुदी

(तीर्थंकर नाम स्तुति)

वंदित्ता तित्थयरा, सामण्णकेवली सिद्धा तहेव।
साहुणो जिणधम्मं च, वोच्छे तित्थयरणामथुदिं॥1॥

श्री तीर्थंकर, सामान्य केवली, सिद्ध, साधु एवं जिनधर्म की वंदना करके 'तीर्थंकर नाम स्तुति' को कहता हूँ।

पंचविदेहाण सट्ठि-समहिद-सयं उवविदेहा हवंति।
सस्सद-मोक्खमही सय, विज्जंते तित्थयरा तत्थ॥2॥

पाँच विदेह क्षेत्रों के एक सौ साठ (160) उपविदेह होते हैं। वह शाश्वत मोक्षभूमि हैं। वहाँ सदैव तीर्थंकर विद्यमान होते हैं।

पणभरदेरावदेसु, दुस्सम-सुस्सम-याले तित्थयरा।
होज्ज एव चउवीसा, अवसप्पिणि-उस्सप्पिणीणं॥3॥

पाँच भरत व पाँच ऐरावत क्षेत्रों में अवसर्पिणी व उत्सर्पिणी के दु:षमा-सु:षमा काल में चौबीस ही तीर्थंकर होते हैं।

तित्थयराणं पूयण-वंदण-गुणणुचिंतणं भत्ति-थुदी।
अदिसयपुण्णणिमित्तं, पावसंवरस्स णिज्जराइ।।4।।

तीर्थंकरों की पूजन, वंदना, गुणानुचिंतन, भक्ति व स्तुति आदि अतिशय पुण्य, पाप कर्मों का संवर एवं निर्जरा का निमित्त है।

दव्वभावणोकम्मं, खयिदुमइभत्तीइ सवरहिदत्थं।
मुत्तिरमं परिणीदुं, तित्थयरथुदिं कित्तिस्सामि।।5।।

द्रव्य-भाव-नोकर्म के क्षय के लिए, स्वपर हित के लिए एवं मुक्ति रमा से परिणय के लिए अति भक्ति से तीर्थंकर स्तुति को कहूँगा।

भव्वुल्ला णिच्छयेण, सिविणे वि जिणबिंब-दंसणेणं दु।
हवंति भावि-जिणवरा, वा तित्थयरणाममेत्तेण।।6।।

स्वप्न में भी जिनबिंबों के दर्शन से अथवा तीर्थंकर का नाम लेने मात्र से भव्य निश्चय से भावी जिनवर होते हैं।

तित्थयरपइडी पुण्ण-रूवा तस्स य हेदू भावणा वि।
ताण देहा भव्वाण, पणकल्लाणपूया वि मणे।।7।।

भव्यों के लिए तीर्थंकर प्रकृति पुण्य रूप है और उसकी हेतु सोलह कारण भावना भी पुण्य रूप हैं। उनकी देह व पंचकल्याणक पूजा भी पुण्य रूप मानी जाती है।

तित्थयराण थुदिं णो, कुणिदुं समत्थो गणहरदेवो वि।
अप्पबुद्धिजुत्तो हं, गुरुकिवाइ कहिदुं भावेमि॥8॥

तीर्थंकरों की स्तुति गणधर देव भी करने में समर्थ नहीं हैं। मैं अल्पबुद्धि से युक्त गुरु कृपा से उसे कहने की भावना करता हूँ।

जह सायरवित्थारो, कहदि बालो सगहत्थं वित्थरिय।
तह ण सक्को हवंतो, थुवमि तित्थयरं भत्तीए॥9॥

जैसे बालक सागर का विस्तार अपने हाथों का विस्तार कर कहता है उसी प्रकार स्तुति करने के लिए शक्य न होता हुआ भी भक्ति से तीर्थंकर की स्तुति करता हूँ।

सघणमेहं णिअंतो, कलावी णच्चंति जह णंदेणं।
रसाल-मंजरिअं वा, कलयंठी कुहं कुहं कुणदि॥10॥
तहा बालबुद्धी हं, तित्थयरथुदिं कुणमि विसुद्धीए।
भावसुद्धी जदि हवदि, इमं पढिय तो ताण गुणो हि॥11॥

जिस प्रकार सघन मेघों को देखते हुए मयूर आनंद से नृत्य करते हैं, आम की बौंर देखकर कोयल कुह-कुह करती है उसी प्रकार बाल बुद्धि से युक्त मैं विशुद्धि से तीर्थंकर की स्तुति करता हूँ। इसको पढ़कर यदि भाव शुद्धि होती है तो वह उनका (पाठकों का) ही गुण जानो।

तियाले थुदिमिमं जे, पढंति सुणंति सुहभावेहिं ते।
उवसमंति तिव्वपाव-कम्माणि बहुपुण्ण-मज्जंति॥12॥
अणिट्ठविग्घं खयंति, दुट्ठदेवादी परिलंघंति णो।
सिज्झंति कज्जिट्ठाणि, पूरंति मणोरहं अइरं॥13॥

जो तीनों काल में शुभ भावों से इस स्तुति को पढ़ते हैं, सुनते हैं, वे तीव्र पाप कर्मों का उपशम करते हैं, बहु पुण्य का अर्जन करते हैं। उनके सभी अनिष्ट विघ्न नष्ट होते हैं, दुष्ट देव आदि उल्लंघन नहीं करते, सर्व इष्ट कार्य सिद्ध होते हैं व शीघ्र सर्व मनोरथ पूर्ण होते हैं।

णमो णिव्वाण-सायर-महासाहु-विमलप्पह-सिरिधराण।
सुदत्तामलप्पहजिण-उद्धरपहु-अंगिरणाहाण॥14॥

श्री निर्वाण जी, श्री सागर जी, श्री महासाधु जी, श्री विमलप्रभ जी, श्री श्रीधर जी, श्री सुदत्त जी, श्री अमलप्रभ जी, श्री उद्धरप्रभु व श्री अंगिरनाथ जी को नमस्कार हो।

सम्मदिं सिंधुदेवं, कुसुमंजलिं सिवगणं उच्छाहं।
णाणेसर-परमेसर-विमलेसरा य जसोहरं हु॥15॥
किण्ह-णाण-सुद्धमदी, भद्ददेवदिक्कंत संतणाहा।
सगभाव-सुद्धीए हु, थुवेमि अच्चंतभावेहिं॥16॥

श्री सन्मति जी, श्री सिंधुदेव जी, श्री कुसुमांजलि जी, श्री शिवगण जी, श्री उत्साहदेव जी, श्री ज्ञानेश्वर जी, श्री परमेश्वर जी, श्री विमलेश्वर जी, श्री यशोधर जी, श्री कृष्णमति जी, श्री ज्ञानमति जी, श्री शुद्धमति जी, श्री भद्रदेव जी, श्री अतिक्रांत जी व श्री शांतनाथ जी की अत्यंतभावों से अपने भावों की शुद्धि के लिए स्तुति करता हूँ।

जंबूदीव-भरदस्स, अदीदयाल हु तित्थयरजिणेसा।
पाविदुं मोक्खसोक्खं, अहिवंदामि अइरं णिच्चं॥17॥

जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र के अतीत काल के तीर्थंकर जिनेशों की शीघ्र मोक्षसुख की प्राप्ति के लिए नित्य अभिवंदना करता हूँ।

णमो उसहजिदसंभव-अहिणंदण-सुमदि-पउमप्पहाणं।
सुपस्सपहु-चंद-सुविहि-सीयल-सेयंसणाहाणं॥18॥

श्री ऋषभनाथ जी, श्री अजितनाथ जी, श्री संभवनाथ जी, श्री अभिनंदननाथ जी, श्री सुमतिनाथ जी, श्री पद्मप्रभ जी, श्री सुपार्श्वप्रभु जी, श्री चंद्रप्रभ जी, श्री सुविधिनाथ जी, श्री शीतलनाथ जी, श्री श्रेयांसनाथ जी को नमस्कार हो।

वासुपुज्जं च विमलं, अणंतणाहं धम्म-संतिणाहा।
कुंथुणाहमरणाहं, मल्लिणाहं मुणिसुव्वदं च॥19॥
णमिणाहं तह णेमिं, पासणाहं महावीरं दु।
णमंसामि भत्तीए, अइणिम्मलभावं कुणंतो॥20॥

श्री वासुपूज्य जी, श्री विमलनाथ जी, श्री अनंतनाथ जी, श्री धर्मनाथ जी, श्री शांतिनाथ जी, श्री कुंथुनाथ जी, श्री अरनाथ जी, श्री मल्लिनाथ जी, श्री मुनिसुव्रतनाथ जी, श्री नमिनाथ जी, श्री नेमिनाथ जी, श्री पार्श्वनाथ जी एवं श्री महावीर स्वामी को अति निर्मल भाव करता हुआ भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

जंबूदीव-भरदस्स, वट्टमाण-चउवीस-तित्थयरा दु।
वड्ढमाण-सच्चरियं, लहिदुं पणमामि हं णिच्चं॥21॥

जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों को वर्द्धमान सच्चारित्र की प्राप्ति के लिए नित्य प्रणाम करता हूँ।

णमो य महापउम-सुरदेव-सुपासणाह-सयंपहाणं।
सव्वप्पभूदजिणिंद-देवकुलपुत्तुदंगजिणाण॥22॥

श्री महापद्म जी, श्री सुरदेव जी, श्री सुपार्श्वनाथ जी, श्री स्वयंप्रभ जी, श्री सर्वात्मभूत जिनेंद्र, श्री देवपुत्र जी, श्री कुलपुत्र जी व श्री उदंक जिन को नमस्कार हो।

पोट्ठिलं-जयकित्ति-मुणिसुव्वद-अर-णिप्पाव णिक्कसाया।
विउलं णिम्मलणाहं, चित्तगुत्तं समाहिगुत्तं।।23।।
सयंभुं-अणिवत्तगं, जयदेवं विमलं देवपालं दु।
अणंतवीरियं जिणं, परियंदामि सय भत्तीए।।24।।

श्री प्रोष्ठिल जी, श्री जयकीर्ति जी, श्री मुनिसुव्रत जी, श्री अर जी श्री निष्पाप जी, श्री निष्कषाय जी, श्री विपुल जी, श्री निर्मलनाथ जी, श्री चित्रगुप्त जी, श्री समाधिगुप्त जी, श्री स्वयंभू जी, श्री अनिवर्तक जी, श्री जयदेव जी, श्री विमल प्रभु जी, श्री देवपाल जी एवं श्री अनंतवीर्य जिन की सदा भक्ति से स्तुति करता हूँ।

जंबूदीव-भरदस्स-अणागद-चउवीस-जिणतित्थयरा।
भत्तीइ अहिणंदामि, सुहतित्थयरपदं लहेदुं।।25।।

जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र के अनागत चौबीस तीर्थंकर जिनों को शुभ तीर्थंकर पद की प्राप्ति के लिए भक्ति से अभिनंदन (प्रणाम) करता हूँ।

णमो पणरूव-जिणधर-संपडिगुज्जयंदाहिखायिगाण।
अहिणंदण-रयणसेण-रामेसर-अणंगुज्झिदाण।।26।।

श्री पंचरूप जी, श्री जिनधर जी, श्री सांप्रतिक जी, श्री ऊर्जयंत जी, श्री आधिक्षायिक जी, श्री अभिनंदन जी, श्री रत्नसेन जी, श्री रामेश्वर जी व श्री अनंगोज्झित जिन को नमस्कार हो।

विण्णासमरोसजिणं, सिरि सुविहाणं पदत्तं कुमारं।
सव्वसेलं पभंजण-सोहग्गणाहा वयबिंदुं॥27॥
सिद्धयर-णाणसरीर-कप्पहुम-तित्थफलेसदेवा दु।
दिणयरं वीरप्पहं, तित्थयर-भयव-महिणंदामि॥28॥

श्री विन्यास जी, श्री अरोष जिन जी, श्री सुविधान जी, श्री प्रदत्त जी, श्री कुमार जी, श्री सर्वशैल जी, श्री प्रभंजन जी, श्री सौभाग्यनाथ जी, श्री व्रतबिंदु जी, श्री सिद्धकर जी, श्री ज्ञानशरीर जी, श्री कल्पद्रुम जी, श्री तीर्थफलेश देव जी, श्री दिनकर जी व श्री वीरप्रभ जी तीर्थंकर भगवान् को प्रणाम करता हूँ।

जंबु-एरावदस्स हु, अदीदयालीण-खेमंकर-तित्थेसा।
मिच्छत्त विणासगा य, तिलोयपुज्जा णमामि सय॥29॥

जंबूद्वीप के ऐरावत क्षेत्र के अतीतकालीन क्षेमंकर, त्रिलोक पूज्य, मिथ्यात्वादि के विनाशक तीर्थेशों को सदा नमस्कार करता हूँ।

णमो बालचंदसामि-सुव्वय-अग्गिसेण-णंदिसेणाण।
सिरिदत्त-वयधर-सोमचंद-धिदिदिग्घ-तित्थेसाण॥30॥

श्री बालचंद्र स्वामी जी, श्री सुव्रत जी, श्री अग्निसेन जी, श्री नंदिसेन जी, श्री दत्त जी, श्री व्रतधर जी, श्री सोमचंद्र जी व श्री धृतिदीर्घ जी तीर्थेशों को नमस्कार हो।

सयाउस्सं विवसिदं, सेयो-विस्सुदजल-सीहसेणा य।
उवसंत-गुत्तसासण-अणंतवीरिय-पासजिणा य॥31॥
अहिधाणं मरुदेवं, सिरिधरं सामकंठ-मग्गिपहुं च।
अग्गिदत्तं सिरिवीरसेणं वंदे भवक्खयिदुं॥32॥

श्री शतायुष्क जी, श्री विवसित जी, श्री श्रेयो जी, श्री विश्रुतजल जी, श्री सिंहसेन जी, श्री उपशान्त जी, श्री गुप्तशासन जी, श्री अनंतवीर्य जी, श्री पार्श्व जिन जी, श्री अभिधान जी, श्री मरुदेव जी, श्री श्रीधर जी, श्री शामकंठ जी, श्री अग्निप्रभ प्रभु जी, श्री अग्निदत्त जी व श्री वीरसेन जी को भव क्षय के लिए वंदन करता हूँ।

जंबु-एरावदस्स हु, वट्टमाण-तित्थयरा सय पुज्जा।
पुण्णफलं भुंजंतो, होदुं तित्थयरं पूयेमि॥33॥

जंबूद्वीप के ऐरावत क्षेत्र के वर्तमान के पूज्य तीर्थंकरों की पुण्य का फल भोगते हुए तीर्थंकर होने के लिए सदा पूजा करता हूँ।

णमो हु सिद्धत्थ-विमल-जयघोस-णंदिसेण-तित्थयराण।
सग्गमंगलजिण-वज्जधारि-णिव्वाण-धम्मधयाण॥34॥

श्री सिद्धार्थ जी, श्री विमल जी, श्री जयघोष जी, श्री नंदिसेन जी, श्री स्वर्गमंगल जिन, श्री वज्रधारि जी, श्री निर्वाण जी व श्री धर्मध्वज तीर्थंकरों को नमस्कार हो।

सिद्धसेण-महासेण-रविमित्त-सच्चसेण-चंदणाहा।
महिचंदं सुदंजणं, देवसेणं सुव्वयणाहं।।35।।
जिणिंदणाह-सुपासा, सुकउसल-मणंतणाहं विमलं च।
अमियसेणं तह अग्गि-दत्तमप्पसिद्धीइ वंदे।।36।।

श्री सिद्धसेन जी, श्री महासेन जी, श्री रविमित्र जी, श्री सत्यसेन जी, श्री चंद्रनाथ जी, श्री महीचंद्र जी, श्री श्रुतांजन जी, श्री देवसेन जी, श्री सुव्रतनाथ जी, श्री जिनेंद्रनाथ जी, श्री सुपार्श्व जी, श्री सुकौशल जी, श्री अनंतनाथ जी, श्री विमल जी, श्री अमृतसेन जी एवं श्री अग्निदत्त जी की आत्मसिद्धि के लिए वंदना करता हूँ।

जंबु-एरावदस्स हु, भावि-तित्थयर-जिणिंददेवाणं।
डज्झिदुं भवकाणणं, णमो सुक्कज्झाणग्गिणा हु।।37।।

शुक्लध्यान रूप अग्नि के द्वारा संसार रूपी वन के दहन के लिए जंबूद्वीप के ऐरावत क्षेत्र के भावी तीर्थंकर जिनेंद्र देवों के लिए नमस्कार हो।

णमो रयणप्पह-अमिद-संभव-अकलंक-चंदसामीणं।
सुहंकर-तच्चजिणिंद, सुंदर-पुरंधर सामीणं।।38।।

श्री रत्नप्रभ जी, श्री अमितनाथ जी, श्री संभवनाथ जी, श्री अकलंक जी, श्री चंद्रस्वामी जी, श्री शुभंकर जी, श्री तत्त्वनाथ जिनेंद्र, श्री सुंदर स्वामी व श्री पुरंधर स्वामी जी को नमस्कार हो।

देवदत्तं च वासवदत्त-सेयोणाह-विस्सरूवा य।
तपसतेजं पडिबोह-सिद्धत्थ-संजम-विमलजिणा।।39।।
देविंद-पवरणाहं, विस्ससेणं मेघणंदिं जिणं च।
तिजेतिगणाहं थुवमि, सगसुद्धप्पविहवलद्धीइ।।40।।

श्री देवदत्त जी, श्री वासवदत्त जी, श्री श्रेयोनाथ जी, श्री विश्वरूप जी, श्री तपसतेज जी, श्री प्रतिबोध देव जी, श्री सिद्धार्थ देव जी, श्री संयम जिन जी, श्री विमलनाथ जी, श्री देवेंद्र जी, श्री प्रवरनाथ जी, श्री विश्वसेन जी, श्री मेघनंदि जिन जी व श्री त्रिजेतृक नाथ जी की स्व शुद्धात्मवैभव की प्राप्ति के लिए स्तुति करता हूँ।

पुव्वधादगिभरहस्स, अदीदयालस्स जिणा तित्थयरा।
वसुयामे वसुगुणं च, लहिदुं वंदे सुहभावेहि।।41।।

पूर्व धातकी खंड के, भरत क्षेत्र के अतीत काल के तीर्थंकर जिन की आठों पहर, आठ गुणों की प्राप्ति के लिए शुभभावों से वंदना करता हूँ।

णमो सिरिजुगादिदेव-सिद्धंत-महेस-परमट्ठजिणाण।
समुद्धर-भूहरणाह-उज्जोद-अज्जव-अभयाणं।।42।।

श्री युगादिदेव जी, श्री सिद्धांत जी, श्री महेशनाथ जी, श्री परमार्थ जिन जी, श्री समुद्धर जी, श्री भूधर नाथ जी, श्री उद्योत जी, श्री आर्जव जी एवं श्री अभयनाथ जी को नमस्कार हो।

अप्पकंव-पउमणाह-पउमणंदि-पियंकरा सुक्किदं च।
भद्दं मुणिचंदं तह, पंचमुट्ठिं जिण-तिमुट्ठिं दु।।43।।
गंगिगं गणणाहं च, सव्वंगपहु-बंभिंदिंददत्ता।
णायगणाहं णमामि, तिविहकम्मक्खयिदुं णिच्चं।।44।।

श्री अप्रकंप जी, श्री पद्मनाथ जी, श्री पद्मनंदी जी, श्री प्रियंकर जी, श्री सुकृतनाथ जी, श्री भद्रनाथ जी, श्री मुनि-चंद्र जी, श्री पंचमुष्टि जी, श्री त्रिमुष्टि जिन, श्री गांगिक नाथ जी, श्री गणनाथ जी, श्री सर्वांग प्रभु जी, श्री ब्रह्मेन्द्र नाथ जी, श्री इंद्रदत्त जी एवं श्री नायक नाथ जी को त्रिविध कर्मों के क्षय के लिए नित्य नमस्कार करता हूँ।

पुव्वधादगिभरहस्स, संपइ पुज्जा बेदहचक्कीहिं।
तित्थयरा हु पणमामि, छिंदिदुं भवकारगकम्मं।।45।।

पूर्व धातकीखंड के भरत क्षेत्र के बारह चक्रवर्तियों के द्वारा पूज्य वर्तमान तीर्थंकरों को भव के कारणभूत कर्मों को छेदने के लिए प्रणाम करता हूँ।

णमो सिद्धत्थ-सम्मग्गुण-जिणिंदपहु-संपण्णणाहाण।
सव्वसामि-मुणीणाह-विसिट्ठदेव-अमरणाहाण।।46।।

श्री सिद्धार्थ जी, श्री सम्यगगुण जी, श्री जिनेंद्र प्रभु जी, श्री संपन्न नाथ जी, श्री सर्वस्वामी जी, श्री मुनिनाथ जी, श्री विशिष्ट देव जी एवं श्री अमरनाथ जी को नमस्कार हो।

बंभसंति-पव्वणाह-मकामुगदेव-ज्ञाणणाह-कप्पा।
संवरं सत्थणाहं, आणंदणाह-रविप्पहं।।47।।
चंदप्पहं सुणंदं, सुकण्णं सुकम्मं अममदेवं च।
पासं सस्सदणाहं, थुवेमि पुज्जा सयिंदेहिं।।48।।

शत इंद्रों से पूजित श्री ब्रह्मशान्ति जी, श्री पर्वनाथ जी, श्री अकामुकदेव, श्री ध्यान नाथ जी, श्री कल्प जी, श्री संवर जी, श्री स्वास्थ्य नाथ जी, श्री आनंद नाथ जी, श्रीरविप्रभ जी, श्री चंद्रप्रभ जी, श्री सुनंद जी, श्री सुकर्ण जी, श्री सुकर्म जी, श्री अममदेव जी, श्री पार्श्वनाथ जी व श्री शाश्वत नाथ जी की स्तुति करता हूँ।

पुव्वधादगि-भरहस्स, भावि-तित्थयरजिणा परियंदामि।
ताणं सुवंदणेणं, सस्सदसुहं लहंति भव्वा।।49।।

पूर्व धातकी खंड के भरत क्षेत्र के भावी तीर्थंकर जिनों की स्तुति करता हूँ। उनकी सुवंदना से भव्यजीव शाश्वत सुख प्राप्त करते हैं।

णमो वज्जसामिप्पहु-उदत्त-सूरसामि-पुरिसोत्तमाण।
सरलावबोहविक्कम-णिग्घडिग-हरिंद-देवाणं।।50।।

श्री वज्रस्वामी प्रभु, श्री उदत्त जी, श्री सूर्यस्वामी जी, श्री पुरुषोत्तम जी, श्री सरल स्वामी जी, श्री अवबोध जी, श्री विक्रम जी, श्री निर्घटिक जी व श्री हरींद्र देव को नमस्कार हो।

परितेरिदं णिव्वाण-णाह-धम्महेदु-चतुम्मुह-जिणाण।
सुकिदिंदं सुदंबुं च, विमलक्कं सिरिदेवप्पहं।।51।।
धरिणिंद-सुतित्थणाह-उदयाणंद-सव्वत्थदेवा सय।
धम्मिगं खेत्तसामिं, सिरिहरिचंदं णमंसामि दु।।52।।

श्री परित्रेरित जी, श्री निर्वाण नाथ जी, श्री धर्म हेतु जी, श्री चतुर्मुख जिन, श्री सुकृतेन्द्र जी, श्री श्रुतांबु जी, श्री विमलार्क जी, श्री देवप्रभ जी, श्री धरणेन्द्र जी, श्री सुतीर्थनाथ जी, श्री उदयानंद जी, श्री सर्वार्थदेव जी, श्री धार्मिक जी, श्री क्षेत्रस्वामी जी व श्री हरिचंद्र जी को नमस्कार करता हूँ।

पुव्वधादगिखंडस्स, एरावदस्स अदीद-तित्थयरा।
पणमामि हं पाविदुं, अक्खीण-णाणं दंसणं च।।53।।

पूर्व धातकी खंड के ऐरावत क्षेत्र के भूतकालीन तीर्थंकरों को अक्षीण ज्ञान व दर्शन की प्राप्ति के लिए नमस्कार करता हूँ।

णमो हु अपच्छिम देव-पुप्फदंत-अरिहदेव-चरियाणं।
सुसिद्धाणंद-णंदग-पउमकूव-उहयणाहीणं।।54।।

श्री अपश्चिम देव जी, श्री पुष्पदंत जी, श्री अर्हदेव जी, श्री चरित्रनाथ जी, श्री सिद्धानंद जी, श्री नंदग जी, श्री पद्मकूप जी व श्री उदयनाभि जी को नमस्कार हो।

रुकमिंदुं च किवालुं, पोट्ठिलं च सिद्धेसर-ममियिंदुं।
सामिणाह-भुवणलिंग-सव्वरह-मेहणंद-जिणा हु॥55॥
णंदिकेसं हरिणाह-महिट्ठ-संतिगदेव-णंदिसामी।
कुंदपासं सिरि-विरोयणं सव्वदा अभिणंदामि॥56॥

श्री रुकमेंदु जी, श्री कृपालु जी, श्री प्रौष्ठिल जी, श्री सिद्धेश्वर जी, श्री अमृतेंदु जी, श्री स्वामी नाथ जी, श्री भुवनलिंग जी, श्री सर्वरथ जी, श्री मेघनंद जिन, श्री नंदिकेश जी, श्री हरिनाथ जी, श्री अधिष्ठ जी, श्री शांतिकदेव जी, श्री नंदि स्वामी जी, श्री कुंदपार्श्व जी तथा श्री विरोचन जी का नित्य अभिनंदन करता हूँ।

पुव्वधादगिखंडस्स, एरावदस्स वट्टमाण-जिणा हु।
णमामि सुहजोगेहिं, केवलणाणं पयासेदुं॥57॥

पूर्वधातकीखंड के ऐरावत क्षेत्र के वर्तमान जिनों को केवलज्ञान के प्रकाश के लिए शुभ योगों से नमस्कार करता हूँ।

णमो दु पवरवीर-विजयप्पह-सप्पय-महामिगिंदाणं।
सिरिचिंतामणि-असोगि-बिमिगिंद-उववासिगाणं च॥58॥

श्री प्रवरवीर जी, श्री विजय प्रभ जी, श्री सत्पद जी, श्री महामृगेन्द्र जी, श्री चिंतामणि जी, श्री अशोकि नाथ जी, श्री द्विमृगेंद्र जी व श्री उपवासिक जिन को नमस्कार हो।

पउमचंद बोहगिंदू-चिंताहिम-मुच्छाहिग-मवासिवं।
देवजलं णारिगं च, अणज्जं णागिंद-जिणिंदं।।59।।
जिणवर-णीलुप्पल-मप्पकंवं पुरोहिद-भिंदगदेवा।
पासणाहं णिव्वाच-विरोसिग-जिणा सय अच्चेमि।।60।।

श्री पद्मचंद्र जी, श्री बोधकेन्दु जी, श्री चिन्ताहिम जी, श्री उत्साहिक जी, श्री अपाशिव जी, श्री देवजल जी, श्री नारिक जी, श्री अनद्य जी, श्री नागेंद्र जिनेंद्र, श्री नीलोत्पल जिनवर, श्री अप्रकंप जी, श्री पुरोहित जी , श्री भिंदकदेव जी, श्री पार्श्वनाथ जी, श्री निर्वाच जी व श्री विरोषिक जिन की सदा अर्चना करता हूँ।

पुव्वधादगिखंडस्स, एरावदस्स हु भावि-तित्थयरा।
सव्वविग्घं खयेदुं, सुद्धगुणं पाविदुं वंदे।।61।।

पूर्व धातकीखंड के ऐरावत क्षेत्र के भावी तीर्थंकरों को सर्व विघ्नों के क्षय व शुद्ध गुण प्राप्ति के लिए वंदन करता हूँ।

णमो हु उसहतित्थेस-पियमित्त-संति-सुमदिणाहाणं च।
सिरि-आदि-अइवत्त-जिण-कलासेण-कम्मजिद-जिणाण।।62।।

श्री वृषभनाथ जी तीर्थेश, श्री प्रियमित्र जी, श्री शांतिनाथ जी, श्री सुमतिनाथ जी, श्री आदिनाथ जी, श्री अतिव्यक्त जिन जी, श्री कलासेन जी, श्री कर्मजित जी जिनों को नमस्कार हो।

पबुद्ध-पव्वजिदणाह-सुधम्म-तमोदीव-वज्जणाहा य।
बुद्धणाहं च पबंधदेव-मदीद-पमुह-पल्लोवमा दु॥63॥
अकोवणिट्ठिदणाहा, मिगणाहि-देविंद-पदत्थसामी।
सिवणाहं णमंसामि, छिंदेदुं सया भववल्लिं॥64॥

श्री प्रबुद्धनाथ जी, श्री प्रव्रजित नाथ, श्री सुधर्म जी, श्री तमोदीप जी, श्री वज्रनाथ जी, श्री बुद्धनाथ जी, श्री प्रबंधदेव जी, श्री अतीतनाथ जी, श्री प्रमुख जी, श्री पल्योपम जी, श्री अकोपनाथ जी, श्री निष्ठितनाथजी, श्री मृगनाभि जी, श्री देवेंद्र जी, श्री पदस्थ स्वामी जी व श्री शिवनाथ जी को संसार वल्लि को छेदने के लिए नमस्कार करता हूँ।

पच्छिमधादगिस्स सय, भरहखेत्तस्स अदीद-तित्थयरा।
अवगदवेदिं होदुं, सुद्धप्पं वेदिदुं णमामि॥65॥

पश्चिम धातकीखंड के भरतक्षेत्र के अतीतकालीन तीर्थंकरों को अपगत वेदी होने के लिए व शुद्धात्मा के अनुभव के लिए नमस्कार करता हूँ।

णमो विस्सचंद-कविल-उसह-पियतेज-पसम-विसमंगाण।
चरियणाह-पहाइच्च-मुंजकेस-वीदवासाणं॥66॥

श्री विश्वचंद्र जी, श्री कपिलनाथ जी, श्री वृषभदेव जी, श्री प्रियतेज जी, श्री प्रशम जी, श्री विषमांग जी, श्री चारित्र नाथ जी, श्री प्रभादित्य जी, श्री मुंजकेश जी व श्री वीतवास जी को नमस्कार हो।

सुराहिवं दयाणाह-सहस्सभुज-जिणसीहा रेवदं च।
बाहुसामि-सिरिमाली, अजोगदेव-मजोगिणाहं।।67।।
कामरिउं च आरंभ-जिणं णेमिणाहं गब्भण्णादिं।
एगज्जिद-जिणं थुवमि, सगेमत्त-सरूवं लहिदुं।।68।।

श्री सुराधिप जी, श्री दयानाथ जी, श्री सहस्रभुज जी, श्री जिनसिंह जी, श्री रैवत जी, श्री बाहुस्वामी जी, श्री श्रीमाली जी, श्री अयोगदेव जी, श्री अयोगिनाथ जी, श्री कामरिपु जी, श्री आरंभनाथ जिन, श्री नेमिनाथ जी, श्री गर्भज्ञाति जी एवं श्री एकार्जित जिन की स्व एकत्व स्वरूप को प्राप्त करने के लिए स्तुति करता हूँ।

पच्छिमधादगिस्स सय, भरहस्स संपइ-जिणवरा वंदे।
रयणत्तय-सत्थेणं, घोरकम्मवाहिणिं जयिदुं।।69।।

पश्चिम धातकीखंड के भरतक्षेत्र के वर्तमान जिनवरों को रत्नत्रय शस्त्र के द्वारा भयंकर कर्म सेना को जीतने के लिए नमस्कार करता हूँ।

णमो रत्तकेस-चक्क-हत्थ-किदणाह परमेसराणं च।
सिरिसुमुत्ति-मुत्तिकंत-णिकेसि-पसत्थ-जिणिंदाणं।।70।।

श्री रक्तकेश जी, चक्रहस्त जी, श्री कृतनाथ जी, श्री परमेश्वर जी, श्री सुमूर्ति जी, श्री मुक्तिकांत जी, श्री निकेशि जी, श्री प्रशस्त जी जिनेंद्र को नमस्कार हो।

णिराहार ममुत्तं च, दिजजिणं मेयोगदमरुजणाहं।
देवणाहं दयाहिग-पुप्फ-णरणाह-पडिभूदा य॥71॥
णागिंदं तवोहिगं, दसाणण-मारण्णग-दसाणीगा।
सत्तिगं जिणं वंदे, विणासिदुं भवपच्चयं हं॥72॥

श्री निराहार जी, श्री अमूर्त जी, श्री द्विजनाथ जिन, श्री श्रेयोगत जी, श्री अरुजनाथ जी, श्री देवनाथ जी, श्री दयाधिक जी, श्री पुष्पनाथ जी, श्री नरनाथ जी, श्री प्रतिभूत जी, श्री नागेंद्र जी, श्री तपोधिक जी, श्री दशानन जी, श्री आरण्यक जी, श्री दशानीक जी व श्री सात्विक जिन को भवप्रत्ययों के विनाश के लिए मैं वंदन करता हूँ।

पच्छिमधादगिस्स सय, भरहस्स खलु भावि-तित्थयर जिणा।
वसुगुणं च पप्पोदुं, णमंसामि तिजोगसुद्धीइ॥73॥

पश्चिम धातकीखंड के भरतक्षेत्र के भावी तीर्थंकर जिनों को वसुगुणों की प्राप्ति के लिए त्रियोग की शुद्धि से नमस्कार करता हूँ।

णमो सिरिसुमेरुणाह-जिणकिद-कइटभ-पसत्थदायगाण।
णिद्दमण-कुलयर-वड्ढमाण-अमियिंदु-जिणिंदाणं॥74॥

श्री सुमेरुनाथ जी, श्री जिनकृत नाथ जी, श्री कैटभनाथ जी, श्री प्रशस्तदायक जी, श्री निर्दमन जी, श्री कुलकर जी, श्री वर्धमान जी व श्री अमृतेंदु जिनेंद्रों को नमस्कार हो।

संखाणंदं च कप्प-किद-हरि-बहुस्स-भग्गवणाहा तह।
सुभद्दसामि-पविपाणि-विपोसिद-बंभचारी जिणा।।75।।
असक्खिग-चारित्तेस-णाह-पारिणामिग-सस्सदजिणा य।
णिहिं कउसिगणाहं च, धम्मेसं परियंदामि सय।।76।।

श्री संख्यानंद जी, श्री कल्पकृत जी, श्री हरिनाथ जी, श्री बहुस्व नाथ जी, श्री भार्गव नाथ जी, श्री सुभद्रस्वामी जी, श्री पविपाणि जी, श्री विपोषित जी, श्री ब्रह्मचारी जिन, श्री असांक्षिक जिन, श्री चारित्रेशनाथ जी, श्री पारिणामिक जी, श्री शाश्वत जिन जी, श्री निधिनाथ जी, श्री कौशिक नाथ जी एवं श्री धर्मेश जी की सदा स्तुति करता हूँ।

पच्छिमधादगीखंड-एरावदस्स अदीद-तित्थयरा।
परमोराल-सरीरं, लहिदुं पूयेमि तिजोगेण।।77।।

पश्चिम धातकीखंड के ऐरावत क्षेत्र के अतीतकालीन तीर्थंकरों की परमौदारिक शरीर की प्राप्ति हेतु त्रियोग से पूजा करता हूँ।

णमो साहिद-जिणसामि-थमितिंद-अच्चाणंद-जिणाणं च।
पुप्फोप्फुल्ल-जिणाणं-मंडिद-पहिद-मदणसिद्धाण।।78।।

श्री साधितनाथ जी, श्री जिनस्वामी जी, श्री स्तमितेन्द्र जी, श्री अत्यानंद जिन, श्री पुष्पोत्फुल्ल जिनवर, श्री मंडितनाथ जी, श्री प्रहितदेव जी व श्री मदन सिद्ध प्रभु को नमस्कार हो।

हसदिंदं-चंदपास-अज्जबोह-जिणवल्लभ-णाहाणं।
सुविहूदिग-कुकुदभास-सुवण्णणाह-हरिवासगा य॥79॥
पियमित्त-धम्मदेवा पियरद-णंदिणाह-अस्साणीगा।
पुव्वं य पासणाहं, चित्तहिदयं दु परियंदामि॥80॥

श्री हसदिंद्र नाथ जी, श्री चंद्रपार्श्वनाथ जी, श्री अब्जबोधनाथ जी, श्री जिनवल्लभ जी, श्री सुविभूतिक जी, श्री कुकुदभासनाथ जी, श्री सुवर्णनाथ जी, श्री हरिवासक जी, श्री प्रियमित्र जी, श्री धर्मदेव जी, श्री प्रियरत जी, श्री नंदिनाथ जी, श्री अश्वानीक जी, श्री पूर्वनाथ जी, श्री पार्श्वनाथ जी एवं श्री चित्रहृदय जिन की स्तुति करता हूँ।

पच्छिमधादगीखंड-एरावदस्स वट्टमाण-जिणा हु।
पणकल्लाणविहूदिं, लहिदु-मप्पविहूदिं वंदे॥81॥

पश्चिम धातकीखंड के ऐरावत क्षेत्र के वर्तमानकालीन जिनों को पंचकल्याण विभूति व आत्मविभूति को प्राप्त करने के लिए वंदन करता हूँ।

णमो रविंदुजिण-सोमकुमार-पुढविवाण-कुलरयणाणं।
धम्म-सोम-वरुणणाह-अहिणंदण सव्वणाहाणं॥82॥

जिनेंद्र श्री रवीन्दुनाथ जी, श्री सोमकुमार जी, श्री पृथ्वीवान्नाथ जी, श्री कुलरत्न जी, श्री धर्मनाथ जी, श्री सोमनाथ जी, श्री वरुण नाथ जी, श्री अभिनंदन नाथ जी एवं श्री सर्वनाथ जी को नमस्कार हो।

सुदिट्ठिं सिट्ठुणाहं, सुधण्ण-सोमचंद-खेत्ताधीसा।
सदंतिगं च जयंतं, तमोरिउं णिम्मिददेवं च॥83॥
किदपासणाहं बोहिलाहं बहुणंदं सुदिट्ठिणाहं।
कंकुमणाभ-वक्खेसजिणा लहिदु-मुहयसिरि-महिणुमि॥84॥

श्री सुदृष्टिनाथ जी, श्री शिष्ट नाथ जी, श्री सुधन्यनाथ जी, श्री सोमचंद्र जी, श्री क्षेत्राधीश जी, श्री संदतिकनाथ जी, श्री जयंतदेव जी, श्री तमोरिपु जी, श्री निर्मित देव जी, श्री कृतपार्श्वनाथ जी, श्री बोधिलाभ जी, श्री बहुनंद जी, श्री सुदृष्टिनाथ जी, श्री कंकुमनाभ जी व श्री वक्षेशनाथ की अंतर लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए स्तुति करता हूँ।

पच्छिमधादगी खंड-एरावदस्स भावि-तित्थेसाण।
देहातीदं हविदुं, जुगपयपउमेसु णमंसामि॥85॥

पश्चिम धातकीखंड के ऐरावत क्षेत्र के भावी तीर्थंकरों के युगल पादपद्मों में देहातीत होने के लिए नमस्कार करता हूँ।

णमो दमणिंदजिणवर-मुत्तसामि-विराग-पलंबजिणाण।
पुढविपदि-चारित्तणिहि-अवराजिद-सुबोहगाणं च॥86॥

श्री दमनेंद्र जिनवर, श्री मूर्तस्वामी जी, श्री विरागस्वामी जी, श्री प्रलंबनाथ जी, श्री पृथ्वीपति जी, श्री चारित्रनिधि जी, श्री अपराजित जी व श्री सुबोधक नाथ जी को नमस्कार हो।

बुद्धीसं वइतालिग-तिमुट्ठि-मुणिबोह-तित्थसामी तह।
धम्मधीसं धरणेस-पभव-अणाइदेवा य॥87॥
अणादिपहु-सव्वतित्थ-णिरुवमदेवा कउमारिगणाहं।
विहारग्गहं वंदे, धरणीसरं विगासदेवं॥88॥

श्री बुद्धीशनाथ जी, श्री वैतालिक नाथ जी, श्री त्रिमुष्टिनाथ जी, श्री मुनिबोधनाथ जी, श्री तीर्थस्वामी जी, श्री धर्मधीशनाथ जी, श्री धरणेश जी, श्री प्रभवदेव जी, श्री अनादीदेव जी, श्री अनादि प्रभु जी, श्री सर्वतीर्थनाथ जी, श्री निरुपम देव जी, श्री कौमारिक नाथ जी, श्री विहारगृह जी, श्री धरणीश्वर जी एवं श्री विकासदेव जी को वंदन करता हूँ।

पुव्वपुक्करद्धस्स हु, भरदस्स य भूदयाल-तित्थयरा।
णमामि विमलभावेण, अप्पविमलगुणं पप्पोदुं॥89॥

पूर्व पुष्करार्द्ध के भरतक्षेत्र के भूतकालीन तीर्थंकरों को विमलभाव से, आत्मा के विमल गुणों की प्राप्ति के लिए नमस्कार करता हूँ।

णमो जगण्णाह सामि-पभास-सरसामि-भरदेसजिणाण।
सिरिदिग्घाणण-जिणेस-विक्खादकित्ति-उवसाणीण॥90॥

श्री जगन्नाथ स्वामी जी, श्री प्रभासनाथ जी, श्री स्वरस्वामी जी, श्री भरतेश जिन, श्री दीर्घाननाथ जी, श्री विख्यातकीर्ति जी व श्री अवसानि प्रभु को नमस्कार हो।

पबोहं तवो पावग-तिपुरेसर-सउगदणाह-जिणिंदा।
वासवं मणोहरं च, सुहकम्मेस मिट्ठुसेविदं।।91।।
विमलिंदं धम्मवास-पसादणाह-पहामिगंग-जिणा हु।
उज्झिदकलंगं फडिग-गजिंद-झाणजया पणमामि।।92।।

श्री प्रबोधनाथ जी, श्री तपोनाथ जी, श्री पावकनाथ जी, श्री त्रिपुरेश्वर नाथ जी, श्री सौगतनाथ जिनेंद्र, श्री वासवनाथ जी, श्री मनोहरनाथ जी, श्री शुभकर्मेश जी, श्री इष्टसेवित नाथ जी, श्री विमलेंद्र जी, भी धर्मवास जी, श्री प्रसादनाथ जी, श्री प्रभामृगांक जिन, श्री उज्झितकलंक जी, श्री स्फटिक प्रभ जी, श्री गजेंद्रनाथ जी एवं श्री ध्यानजय जी को प्रणाम करता हूँ।

पुव्वपुक्करद्धस्स हु, भरदस्स य वट्टमाण-तित्थयरा।
भवसिंधुं णित्थरिदुं, संथुवमि गुणाणुरत्तीए।।93।।

पूर्व पुष्करार्द्ध के भरत क्षेत्र के वर्तमान तीर्थंकरों की भवसिंधु को पार करने हेतु गुणानुरक्ति से संस्तुति करता हूँ।

णमो वसंदद्धय-जिण-तिजयंत-तित्थंभ-परबंभाणं।
अबालिस-पवादिणाह-भूमाणंद-तिणयणाणं च।।94।।

श्री वसंतध्वज जिन, श्री त्रिजयंतनाथ जी, श्री त्रिस्तंभ नाथ जी, श्री परब्रह्म नाथ जी, श्री अबालिश नाथ जी, श्री प्रवादिनाथ जी, श्री भूमानंद जी एवं श्री त्रिनयननाथ जी को नमस्कार हो।

विद्दाणं परमप्पप्पसंगं भूमिंदं च गोसामिं।
कल्लाणप्पयासिदं, मंडल-महावसुदयवाणा।।95।।
दिव्वजोदि-पबोहेस-अभयंग-पमिद-दिव्वकारगाणं।
वदसामिं णिहाणं च, तिकम्मणाहं अहिणंदामि।।96।।

श्री विद्वान् जी, श्री परमात्मप्रसंग जी, श्री भूमीन्द्र जी, श्री गोस्वामी जी, श्री कल्याणप्रकाशित जी, श्री मंडलनाथ जी, श्री महावसु जी, श्री उदयवान जी, श्री दिव्यज्योति जी, श्री प्रबोधेश जी, श्री अभयांक जी, श्री प्रमितनाथ जी, श्री दिव्यस्फारक नाथ जी, श्री व्रतस्वामी जी, श्री निधाननाथ जी एवं श्री त्रिकर्मानाथ जी का अभिनंदन करता हूँ।

पुव्वपुक्करद्धस्स हु, भरदस्स भावि-तित्थयर-जिणिंदा।
तिसट्ठिकम्मं खयिदुं, लहिदुं अरिहपदं पणमामि।।97।।

पूर्व पुष्करार्द्ध के भरतक्षेत्र के भावी तीर्थंकर जिनेंद्रों को त्रेसठ कर्म के क्षय व अरिहंत पद की प्राप्ति हेतु प्रणाम करता हूँ।

णमो किदिणाहुवविट्ठ-देवाइच्च-अत्थाणिग-जिणाणं।
पचंद-वेसिग-तिभाणु-बंभ-वज्जंग-अविरोहीण।।98।।

श्रीकृतिनाथ जी, श्री उपविष्टनाथ जी, श्री देवादित्य जी, श्री आस्थानिक जिन, श्री प्रचंद्रनाथ जी, श्री वेषिकनाथ जी, श्री त्रिभानुनाथ जी, श्री ब्रह्मनाथ जी, श्री वज्रांगनाथ जी व श्री अविरोधी जिन को नमस्कार हो।

अपावं लोकोत्तरं, जलहिसेस-विज्जोद-सुमेरुजिणा।
विभाविदं वच्छलं च, जिणालयं तुसारणाहं दु॥99॥
भुवणसामिं च सुकाम-देवाहिदेवाकारिमणाहं च।
बिंबिदणाहं वंदिय, कुव्वेमि गुणचिंतणं ताण॥100॥

श्री अपापनाथ जी, श्री लोकोत्तरनाथ जी, श्री जलधिशेष जी, श्री विद्योतनाथ जी, श्री सुमेरुनाथ जी, श्री विभावितनाथ जी, श्री वत्सलनाथ जी, श्री जिनालय नाथ जी, श्री तुषारनाथ जी, श्री भुवनस्वामी जी, श्री सुकामनाथ जी, श्री देवाधिदेव जी, श्री अकारिमनाथ जी एवं श्री बिंबित नाथ जी की वंदना करके मैं उनके गुणों का चिंतन करता हूँ।

पुव्वपुक्करद्धस्स हु, एरावदस्स अदीद-तित्थयरा।
देहातीदं होदुं, पणमणाणं लहिदुं णमामि॥101॥

पूर्व पुष्करार्द्ध के ऐरावत क्षेत्र के अतीत तीर्थंकरों को देहातीत होने व पंचम अर्थात् केवलज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रणाम करता हूँ।

णमो संकरक्खवास-णग्गाहिप-णग्गाहिपदीसाणं।
णट्ठपाखंड-जिणिंद-सिविणवेद-तवोधणाणं च॥102॥

श्री शंकरनाथ जी, श्री अक्षवास जी, श्री नग्नाधिप जी, श्री नग्नाधिपतीश जी, श्री नष्टपाखंड जिनेंद्र, श्री स्वप्नवेद नाथ जी व श्री तपोधन नाथ जिन को नमस्कार हो।

पुप्फकेदुं धम्मिगं, चंदकेदु-मणुरत्त-वीयरागा।
उज्जोदं तमोपेक्ख-महुणाह-मरुदेव-दमजिणा।।103।।
उसहं सिलातणणाह-विस्स-महिंदा णंद-तमोहरा य।
बंभजणाहं दु परम-बंभं होदुं परियंदामि।।104।।

श्री पुष्पकेतु जी, श्री धार्मिकनाथ जी, श्री चंद्रकेतु नाथ जी, श्री अनुरक्तज्योति प्रभु, श्री वीतराग जी, श्री उद्योतनाथ जी, श्री तमोपेक्ष जी, श्री मधुनाद जी, श्री मरुदेव जी, श्री दमनाथ जी, श्री वृषभ स्वामी जी, श्री शिलातन नाथ जी, श्री विश्वनाथ जी, श्री महेंद्रनाथ जी, श्री नंदनाथ जी, श्री तमोहरनाथ जी एवं श्री ब्रह्मजनाथ जी की परमब्रह्म होने के लिए नित्य स्तुति करता हूँ।

पुव्वपुक्करद्धस्स हु, एरावदस्स संपइ तित्थयरा।
णमंसामि भत्तीए, णिविट्टीए सव्वदोसाण।।105।।

पूर्व पुष्करार्द्ध के ऐरावत क्षेत्र के वर्तमान तीर्थंकरों को सर्व दोषों की निवृत्ति के लिए भक्ति से नमस्कार करता हूँ।

णमो जसोहर-सुक्किद-अभयघोस-णिव्वाण-वदवासाण।
सिरि अदिरायस्सदेव-अज्जुण-तवच्चंद-सामीण।।106।।

श्री यशोधरनाथ जी, श्री सुकृतनाथ जी, श्री अभयघोष जी, श्री निर्वाण जी, श्री व्रतवास जी, श्री अतिराजनाथ जी, श्री अश्व देव जी, श्री अर्जुननाथ जी, श्री तपश्चंद्र जी स्वामी को नमस्कार हो।

सारीरिगं महेसं, सुग्गीवं दिढपहारंबरीगं।
दयादीदं तुंबरं, सव्वसीलं तह पडिजादं॥107॥
जिदिंदियं तवाइच्च-रयणायर-देवेस-लंछणजिणा।
सुप्पदेसणाह-मप्प-पदेसाण सुद्धीइ वंदे॥108॥

श्री शारीरिक नाथ जी, श्री महेशनाथ जी, श्री सुग्रीवनाथ जी, श्री दृढ़ प्रहारनाथ जी, श्री अंबरीक नाथ जी, श्री दयातीत जी, श्री तुंबरनाथ जी, श्री सर्वशीलनाथ जी, श्री प्रतिजात जी, श्री जितेंद्रिय नाथ श्री, श्री तपादित्य नाथ जी, श्री रत्नाकर नाथ जी, श्री देवेश नाथ जी, श्री लांछन नाथ जिन व श्री सुप्रदेश नाथ जी को आत्म प्रदेशों की शुद्धि के लिए नमस्कार करता हूँ।

पुव्वपुक्करद्धस्स हु, एरावदस्स हु भावितित्थयरा।
सधम्मलद्धीइ थुवमि, रयणत्तयफलं पप्पोदुं॥109॥

पूर्व पुष्करार्द्ध के ऐरावत क्षेत्र के भावी तीर्थंकरों की रत्नत्रय के फल की प्राप्ति व स्वधर्म की उपलब्धि के लिए स्तुति करता हूँ।

णमो पउमचंदसामि-रयणंगजोगिकेस-सव्वत्थाण।
रिसि-हरिभद्द-गुणाहिव-पारत्तिग-बंभ-मुणिंदाण॥110॥

श्री पद्मचंद्र स्वामी, श्री रत्नांग जी, श्री अयोगिकेश जी, श्री सर्वार्थ जी, श्री ऋषिनाथ जी, श्री हरिभद्र जी, श्री गुणाधिप जी, श्री पारत्रिक जी, श्री ब्रह्मनाथ जी, श्री मुनीन्द्र जी को नमस्कार हो।

सिरिदीवग-राजरिसी, विसाह-माणिंदिदं रविसामिं च।
सोमदत्त-जयसामी, मोक्खणाहं अग्गभासं दु॥111॥
धणुस्संग-मुत्तिणाह-रोमंचग-पसिद्ध-जिदेससामी।
णियजिणत्तं पाविदुं, मोहारिं जयिदुं पणमामि॥112॥

श्री दीपक जी, श्री राजर्षि जी, श्री विशाख जी, श्री आनिंदित जी, श्री रविस्वामी जी, श्री सोमदत्त जी, श्री जयस्वामी जी, श्री मोक्षनाथ जी, श्री अग्रभास जी, श्री धनुषांग जी, श्री मुक्तिनाथ जी, श्री रोमांचक जी, श्री प्रसिद्धनाथ जी, श्री जितेश स्वामी को मोह रूपी शत्रु को जीतने व निजजिनत्व को प्राप्त करने हेतु नमस्कार करता हूँ।

पच्छिमपुक्करद्धस्स, भरदस्स जिणा अदीद-तित्थयरा।
भवसिंधुतीर-लहिदुं, सिद्धिसदणं वासिदुं थुवमि॥113॥

पश्चिम पुष्कराद्धं द्वीप के भरत क्षेत्र के अतीतकालीन तीर्थंकरों की संसार सागर के तट को प्राप्त करने हेतु, सिद्ध सदन में वास करने के लिए स्तुति करता हूँ।

णमो हु सव्वंगसामि-पउमायर-पहायर-बलणाहाण।
जोगीसरणाहस्स य, सुहुमंग-वयचलादीदाण॥114॥

श्री सर्वांगस्वामी जी, श्री पद्माकर जी, श्री प्रभाकर जी, श्री बलनाथ जी, श्री योगीश्वरनाथ जी, श्री सूक्ष्मांग जी तीर्थंकर, श्री व्रतचलातीत जी को नमस्कार हो।

कलंबगं परिचागं, णिसेहगं तहा पावावहारिं च।
सुसामिं मुत्तिचंदं अप्पासिग-जयचंद-मलाहारी॥115॥
सुसंजदं-मलयसिंधु-मक्खधरं देवधरं देवगणं।
आगमिग-विणीद-रदाणंदा य परियंदामि सया॥116॥

श्री कलंबक जी, श्री परित्याग जी, श्री निषेधक जी, श्री पापापहारि जी, श्री सुस्वामी जी, श्री मुक्तिचंद्र जी, श्री अप्राशिक जी, श्री जयचंद्र जी, श्री मलाधारि जी जिन, श्री सुसंयत जी, श्री मलयसिंधु जी, श्री अक्षधर जी, श्री देवधर जी, श्री देवगण जी, श्री आगमिक जी, श्री विनीत जी व श्री रतानंद जी को सदा वंदन करता हूँ।

पच्छिमपुक्करद्धस्स, भरदस्स संपइ-तित्थयरजिणा हु।
चउविहकम्मं डहिदुं, अप्पसत्तिं फुरिदुं णमामि॥117॥

पश्चिम पुष्कराद्ध द्वीप के भरतक्षेत्र के वर्तमान कालीन तीर्थंकर जिनों को चारों प्रकार के कर्म के दहन के लिए एवं आत्मशक्ति को प्रकट करने के लिए नमस्कार करता हूँ।

णमो दु पहावगदेव-विणदेंद-सुहावग-दिणयराणं च।
अणंगतेज-धणदत्त-पउरव-जिणदत्त-जिणाणं च॥118॥

श्री प्रभावक देव जी, श्री विनतेंद्र जी, श्री सुभावक जी, श्री दिनकर जी, श्री अगस्त्येज जी, श्री धनदत्त जी, श्री पौरव जी व श्री जिनदत्त जी जिनवरों को नमस्कार हो।

पासं मुणिसिंधुं तह, अत्थिगं भवाणीगं णिवणाहं।
णारायणं पसमोग-भूपइ-सुदिट्ठि-भवभीरू य॥119॥
णंदणं भग्गव-सुवसु-परावस-वणवासिग-भरदेसा य।
अच्चेमि वसुदव्वेहि, इंदाइ-पुण्णपदं लहिदुं॥120॥

श्री पार्श्वनाथ जी, श्री मुनिसिंधु जी, श्री आस्तिक जी, श्री भवानीक जी, श्री नृपनाथ जी, श्री नारायण जी, श्री प्रशमौक जी, श्री भूपति जी, श्री सुदृष्टि जी, श्री भवभीरू जी, श्री नंदननाथ जी, श्री भार्गवनाथ जी, श्री सुवसुनाथ जी, श्री परावश जी, श्री वनवासिक जी व श्री भरतेश जी की इंद्रादि पुण्यपद की प्राप्ति के लिए वसुद्रव्यों से अर्चना करता हूँ।

पच्छिमपुक्करद्धस्स, भरदस्स भावि-तित्थयर-जिणेसा।
सव्वोदयिगभावं च, णासिदुं अहिवंदामि सया॥121॥

पश्चिम पुष्करार्द्ध के भरतक्षेत्र के भावी तीर्थंकर जिनेश की सर्व औदयिक भाव के नाश के लिए सदा अभिवंदना करता हूँ।

णमो उवसंत-फग्गुण-पुव्वास-सोधम्म-गोरिग-जिणाण।
तिविक्कम-णरसीह-मिगवसु-सोम-सुहासुराणं तह॥122॥

श्री उपशांत जी, श्री फाल्गुण जी, श्री पुर्वास जी, श्री सौधर्म जी, श्री गौरिक जिन, श्री त्रिविक्रम जी, श्री नरसिंह जी, श्री मृगवसु जी, श्री सोमेश्वर जी व श्री सुधासुर जी को नमस्कार हो।

अपावमल्ल-विवाधा, संधिगं मंधत्तं अस्सतेजं।
विज्जाहरं सुलोयण-मोणणिही तह पुंडरीगं।।123।।
चित्तगणं-मणिरिंदं, सव्वकालं भूरिसवण-जिणिंदं।
पुण्णोगं दु उक्किट्ठ-पुण्णं लहेदुं णमामि सय।।124।।

श्री अपापमल्ल जिन, श्री विबाध जी, श्री संधिक स्वामी, श्री मान्धात्र जी, श्री अश्वतेज जी, श्री विद्याधर जी, श्री सुलोचन जी, श्री मौननिधि जी, श्री पुंडरीक जी, श्री चित्रगण जी, श्री मणिरिंद्र जी, श्री सर्वकाल जी, श्री भूरिश्रवण जिनेंद्र व श्री पुण्योग तीर्थेश को उत्कृष्ट पुण्य की प्राप्ति के लिए सदा नमस्कार करता हूँ।

पच्छिमपुक्करद्धस्स, एरावदस्स अदीद-तित्थयरा।
सादिणंतसहावं च, णियचित्ते फुरिदुं संथुवमि।।125।।

पश्चिम पुष्करार्द्ध के ऐरावत क्षेत्र के अतीत कालीन तीर्थंकरों को निज चित्त में सादि अनंत स्वभाव को प्रकट करने के लिए स्तुति करता हूँ।

णमो गंगेयग-णल्लवासव-भीम-दयाहिग-सुभद्दाण।
सामि-हणिग-णंदिघोस-रूवबीय-वज्जणाहाणं।।126।।

श्री गांगेयक जी, श्री नल्लवासव जी, श्री भीम प्रभु जी, श्री दयाधिक जी, श्री सुभद्र जी, श्री स्वामी जी, श्री हनिक जी, श्री नंदिघोष जी, श्री रूपबीज जी व श्री वज्रनाभ को नमस्कार हो।

संतोसं च सुधम्मं, फणीसर-वीरचंद-मेहाणिगा।
सच्छंदं कोवक्खय-मकामं सया धम्मधामं।।127।।
सुत्तिसेण-खेमंकर-दयाणाह-कित्तिव-सुहंकरा तह।
वसुविहकम्मक्खयिदुं, पणमामि सगप्पलद्धीए।।128।।

श्री संतोष जी, श्री सुधर्म जी, श्री फणीश्वर जी, श्री वीरचंद्र जी, श्री मेधानिक जी, श्री स्वच्छनाथ जी, श्री कोपक्षय जी, श्री अकाम जी, श्री धर्मधाम जी, श्री सूक्तिसेन जी, श्री क्षेमंकर जी, श्री दयानाथ जी, श्री कीर्तिप जी व श्री शुभंकर जी को आठ प्रकार के कर्मों के क्षय व स्वात्मोपलब्धि के लिए सदा प्रणाम करता हूँ।

पच्छिमपुक्करद्धस्स, एरावदस्स संपइ-तित्थयरा।
परियंदामि सव्वदा, आरोहेदुं खवगसेणिं।।129।।

पश्चिम पुष्करार्द्ध के ऐरावत क्षेत्र के वर्तमान कालीन तीर्थंकरों की क्षपकश्रेणी पर आरोहण हेतु सर्वदा स्तुति करता हूँ।

णमो हु अदोसिग-उसह-विणयाणंद-मुणिभारद-जिणाणं।
सिरि-इंदग-चंदकेदु-धयाइच्च-वसुबोहगाणं।।130।।

श्री अदोषिक जी, श्री वृषभ जी, श्री विनयानंद जी, श्री मुनिभारत जिन, श्री इंद्रक जी, चंद्रकेतु जी, श्री ध्वजादित्य जी व श्री वसुबोधक जिनों को नमस्कार हो।

मुत्तिगदं धम्म बोह-देवंग-मारीचिग-तित्थेसा य।
सुजीवणं जसोहरं, गोदमं मुणिसुद्धिं णिच्चं॥131॥
पबोहिगं सदाणीग-चारित्त-सयाणंदा-वेदत्थं च।
सुहाणीग-जोदिम्मुह-सुरद्धा अहिणुमिं भत्तीइ॥132॥

श्री मुक्तिगत जी, श्री धर्मबोध जी, श्री देवांग जी, श्री मारीचिक जी, श्री सुजीवन जी, श्री यशोधर जी, श्री गौतम जी, श्री मुनिशुद्धि जी, श्री प्रबोधिक जी, श्री सदानीक जी, श्री चारित्र नाथ जी, श्री शतानंद जी, श्री वेदार्थ जी, श्री सुधानीक जी, श्री ज्योतिर्मुख जी एवं श्री सुरार्ध जी की भक्ति से स्तुति करता हूँ।

पच्छिम-पुक्करद्धस्स, एरावदस्स भावितित्थेसा य।
जिणधम्मप्पवट्टगा, तिलोयपुज्जा पत्थेमि हं॥133॥

पश्चिम पुष्करार्द्ध के ऐरावत क्षेत्र के जिनधर्मप्रवर्तक, त्रिलोकपूज्य भावी तीर्थंकरों की मैं स्तुति करता हूँ।

जे तित्थयर-पदेसुं, पणमंते परमभत्ति-भावेहिं।
सोक्खं ते भवसिंधुं, भत्ति-पचंड-रविकिरणेहिं॥134॥

जो परमभक्ति भाव से तीर्थंकर के पदों में नमस्कार करते हैं, वे भक्ति रूपी प्रचंड सूर्य किरणों से भव सागर को सोखते हैं।

जो को वि सुहभावेहि, पढदि वीसुत्तर-सत्तसय-णामं।
सुणेदि चिंतदि सुमरदि ताण खयंति सव्वपावाणि॥135॥

जो कोई भी शुभ भावों से सात सौ बीस (720) तीर्थंकरों के नाम पढ़ता है, सुनता है, चिंतन करता है, स्मरण करता है उनके सर्व पाप क्षय होते हैं।

तित्थयर-णाम-थुदिं हु, तियाले सिमरंति जे के वि भवी।
पणकल्लाणविहूदिं, भुंजंतो लहंति सिवं ते॥136॥

जो कोई भी भव्य जीव तीर्थंकर नाम स्तुति का स्मरण तीनों काल में करते हैं, वे पंचकल्याणक की विभूति को भोगते हुए मोक्ष प्राप्त करते हैं।

वसुकम्माणि णासिदुं, वसुगुणं वसुपुढविं लहिदुं थुवमि।
वसुयामे वसुणंदी सूरी सय वसुपाडिहेरं॥137॥

आठ कमों के नाश, अष्ट प्रातिहार्य, अष्ट गुण व अष्टम पृथ्वी को प्राप्त करने के लिए मैं आचार्य वसुनंदी आठों पहर तीर्थंकर की स्तुति करता हूँ।

प्रशस्ति

संतिपायजयकित्ती, देस-विज्जाणंदा णमिय पुण्णो।
तारंगाइ पणवीस-सयसत्तदालि-वीरद्धम्मि॥138॥

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी, महातपस्वी आचार्य श्री पायसागर जी, अध्यात्मयोगी आचार्य श्री जयकीर्ति जी, भारत गौरव आचार्य श्री देशभूषण जी, राष्ट्र संत, सिद्धांत चक्रवर्ती, क्षपकराज शिरोमणी आचार्य श्री विद्यानंद जी को नमस्कार करके पच्चीस सौ सैंतालीस (2547) वीर निर्वाण संवत् में तारंगा जी सिद्धक्षेत्र पर यह ग्रंथ पूर्ण हुआ।

गंथो समत्तो

तीर्थंकर नाम स्तुति

णमो णिव्वाण-सायर-महासाहु-विमलप्पह-सिरिधराण।
सुदत्तामलप्पहजिण-उद्धरपहु-अंगिरणाहाण।।1।।
सम्मदिं सिंधुदेवं, कुसुमंजलिं सिवगणं उच्छाहं।
णाणेसर-परमेसर-विमलेसरा य जसोहरं हु।।2।।
किण्ह-णाण-सुद्धमदी, भद्ददेवदिक्कंत संतणाहा।
सगभाव-सुद्धीए हु, थुवेमि अच्चंतभावेहिं।।3।।
जंबूदीव-भरदस्स, अदीदयाल हु तित्थयरजिणेसा।
पाविदुं मोक्खसोक्खं, अहिवंदामि अइरं णिच्चं।।4।।
णमो उसहजिदसंभव-अहिणंदण-सुमदि-पउमप्पहाणं।
सुपस्सपहु-चंद-सुविहि-सीयल-सेयंसणाहाणं।।5।।
वासुपुज्जं च विमलं, अणंतणाहं धम्म-संतिणाहा।
कुंथुणाहमरणाहं, मल्लिणाहं मुणिसुव्वदं च।।6।।
णमिणाहं तह णेमिं, पासणाहं महावीरं दु।
णमंसामि भत्तीए, अइणिम्मलभावं कुणंतो।।7।।
जंबूदीव-भरदस्स, वट्टमाण-चउवीस-तित्थयरा दु।
वड्ढमाण-सच्चरियं, लहिदुं पणमामि हं णिच्चं।।8।।
णमो य महापउम-सुरदेव-सुपासणाह-सयंपहाणं।
सव्वप्पभूदजिणिंद-देवकुलपुत्तुदंगजिणाण।।9।।
पोट्ठिलं-जयकित्ति-मुणिसुव्वद-अर-णिप्पाव णिक्कसाया।
विउलं णिम्मलणाहं, चित्तगुत्तं समाहिगुत्तं।।10।।

सयंभुं-अणिवत्तगं, जयदेवं विमलं देवपालं दु।
अणंतवीरियं जिणं, परियंदामि सय भत्तीए।।11।।
जंबूदीव-भरदस्स-अणागद-चउवीस-जिणतित्थयरा।
भत्तीइ अहिणंदामि, सुहतित्थयरपदं लहेदुं।।12।।
णमो पणरूव-जिणधर-संपडिगुज्जयंदाहिखायिगाण।
अहिणंदण-रयणसेण-रामेसर-अणंगुज्झिदाण।।13।।
विण्णासमरोसजिणं, सिरि सुविहाणं पदत्तं कुमारं।
सव्वसेलं पभंजण-सोहग्गणाहा वयबिंदुं।।14।।
सिद्धयर-णाणसरीर-कप्पद्दुम-तित्थफलेसदेवा दु।
दिणयरं वीरप्पहं, तित्थयर-भयव-महिणंदामि।।15।।
जंबु-एरावदस्स हु, अदीदयालीण-खेमंकर-तित्थेसा।
मिच्छत्त विणासगा य, तिलोयपुज्जा णमामि सय।।16।।
णमो बालचंदसामि-सुव्वय-अग्गिसेण-णंदिसेणाण।
सिरिदत्त-वयधर-सोमचंद-धिदिदिग्घ-तित्थेसाण।।17।।
सयाउस्सं विवसिदं, सेयो-विस्सुदजल-सीहसेणा य।
उवसंत-गुत्तसासण-अणंतवीरिय-पासजिणा य।।18।।
अहिधाणं मरुदेवं, सिरिधरं सामकंठ-मग्गिपहुं च।
अग्गिदत्तं सिरिवीरसेणं वंदे भवक्खयिदुं।।19।।
जंबु-एरावदस्स हु, वट्टमाण-तित्थयरा सय पुज्जा।
पुण्णफलं भुंजंतो, होदुं तित्थयरं पूयेमि।।20।।
णमो हु सिद्धत्थ-विमल-जयघोस-णंदिसेण-तित्थयराण।
सग्गमंगलजिण-वज्जधारि-णिव्वाण-धम्मधयाण।।21।।
सिद्धसेण-महासेण-रविमित्त-सच्चसेण-चंदणाहा।
महिचंदं सुदंजणं, देवसेणं सुव्वयणाहं।।22।।

जिणिंदणाह-सुपासा, सुकउसल-मणंतणाहं विमलं च।
अमियसेणं तह अग्गि-दत्तमप्पसिद्धीइ वंदे।।23।।
जंबु-एरावदस्स हु, भावि-तित्थयर-जिणिंददेवाणं।
डज्झिदुं भवकाणणं, णमो सुक्कज्झाणग्गिणा हु।।24।।
णमो रयणप्पह-अमिद-संभव-अकलंक-चंदसामीणं।
सुहंकर-तच्च-सुंदर-पुरंधर-सामि-देवाणं च।।25।।
देवदत्तं च वासवदत्त-सेयोणाह-विस्सरूवा य।
तपसतेजं पडिबोह-सिद्धत्थ-संजम-विमलजिणा।।26।।
देविंद-पवरणाहं, विस्ससेणं मेघणंदिं जिणं च।
तितेतिगणाहं थुवमि, सगसुद्धप्पविहवलद्धीइ।।27।।
पुव्वधादगिभरहस्स, अदीदयालस्स जिणा तित्थयरा।
वसुयामे वसुगुणं च, लहिदुं वंदे सुहभावेहि।।28।।
णमो सिरिजुगादिदेव-सिद्धंत-महेस-परमट्ठजिणाण।
समुद्धर-भूहरणाह-उज्जोद-अज्जव-अभयाणं।।29।।
अप्पकंव-पउमणाह-पउमणंदि-पियंकरा सुक्किदं च।
भद्दं मुणिचंदं तह, पंचमुट्ठिं जिण-तिमुट्ठिं दु।।30।।
गंगिगं गणणाहं च, सव्वंगपहु-बंभिंदिंददत्ता।
णायगणाहं णमामि, तिविहकम्मक्खयिदुं णिच्चं।।31।।
पुव्वधादगिभरहस्स, संपइ पुज्जा बेदहचक्कीहिं।
तित्थयरा हु पणमामि, छिंदिदुं भवकारगकम्मं।।32।।
णमो सिद्धत्थ-सम्मग्गुण-जिणिंदपहु-संपण्णणाहाण।
सव्वसामि-मुणीणाह-विसिट्ठदेव-अमरणाहाण।।33।।
बंभसंति-पव्वणाह-मकामुगदेव-ज्ञाणणाह-कप्पा।
संवरं सत्थणाहं, आणंदणाह-रविप्पहं।।34।।

चंदप्पहं सुणंदं, सुकण्णं सुकम्मं अममदेवं च।
पासं सस्सदणाहं, थुवेमि पुज्जा सयिंदेहिं।।35।।
पुव्वधादगि-भरहस्स, भावि-तित्थयरजिणा परियंदामि।
ताणं सुवंदणेणं, सस्सदसुहं लहंति भव्वा।।36।।
णमो वज्जसामिप्पहु-उदत्त-सूरसामि-पुरिसोत्तमाण।
सरलावबोहविक्कम-णिग्घडिग-हरिंद-देवाणं।।37।।
परितेरिदं णिव्वाण-णाह-धम्महेदु-चतुम्मुह-जिणाण।
सुकिदिंदं सुदंबुं च, विमलक्कं सिरिदेवप्पहं।।38।।
धरिणिंद-सुतित्थणाह-उदयाणंद-सव्वत्थदेवा सय।
धम्मिगं खेत्तसामिं, सिरिहरिचंदं णमंसामि दु।।39।।
पुव्वधादगिखंडस्स, एरावदस्स अदीद-तित्थयरा।
पणमामि हं पाविदुं, अक्खीण-णाणं दंसणं च।।40।।
णमो हु अपच्छिम देव-पुप्फदंत-अरिहदेव-चरियाणं।
सुसिद्धाणंद-णंदग-पउमकूव-उहयणाहीणं।।41।।
रुकमिंदुं च किवालुं, पोट्ठिलं च सिद्धेसर-ममियिंदुं।
सामिणाह-भुवणलिंग-सव्वरह-मेहणंद-जिणा हु।।42।।
णंदिकेसं हरिणाह-महिट्ठ-संतिगदेव-णंदिसामी।
कुंदपासं सिरि-विरोयणं सव्वदा अभिणंदामि।।43।।
पुव्वधादगिखंडस्स, एरावदस्स वट्टमाण-जिणा हु।
णमामि सुहजोगेहिं, केवलणाणं पयासेदुं।।44।।
णमो दु पवरवीर-विजयप्पह-सप्पय-महामिगिंदाणं।
सिरिचिंतामणि-असोगि-बिमिगिंद-उववासिगाणं च।।45।।
पउमचंद बोहगिंदू-चिंताहिम-मुच्छाहिग-मवासिवं।
देवजलं णारिगं च, अणज्जं णागिंद-जिणिंदं।।46।।

जिणवर-णीलुप्पल-मप्पकंवं पुरोहिद-भिंदगदेवा।
पासणाहं णिव्वाच-विरोसिग-जिणा सय अच्चेमि।।47।।
पुव्वधादगिखंडस्स, एरावदस्स हु भावि-तित्थयरा।
सव्वविग्घं खयेदुं, सुद्धगुणं पाविदुं वंदे।।48।।
णमो हु उसहतित्थेस-पियमित्त-संति-सुमदिणाहाणं च।
सिरिआदिअइवत्तजिणकलासेणकम्मजिदजिणाण।।49।।
पबुद्ध-पव्वजिदणाह-सुधम्म-तमोदीव-वज्जणाहा य।
बुद्धणाहं च पबंधदेव-मदीद-पमुह-पल्लोवमा दु।।50।।
अकोवणिट्ठिदणाहा, मिगणाहि-देविंद-पदत्थसामी।
सिवणाहं णमंसामि, छिंदेदुं सया भववल्लिं।।51।।
पच्छिमधादगिस्स सय, भरहखेत्तस्स अदीद-तित्थयरा।
अवगदवेदिं होदुं, सुद्धप्पं वेदिदुं णमामि।।52।।
णमो विस्सचंद-कविल-उसह-पियतेज-पसम-विसमंगाण।
चरियणाह-पहाइच्च-मुंजकेस-वीदवासाणं।।53।।
सुराहिवं दयाणाह-सहस्सभुज-जिणसीहा रेवदं च।
बाहुसामि-सिरिमाली, अजोगदेव-मजोगिणाहं।।54।।
कामरिउं च आरंभ-जिणं णेमिणाहं गब्भणणादिं।
एगज्जिद-जिणं थुवमि, सगेमत्त-सरूवं लहिदुं।।55।।
पच्छिमधादगिस्स सय, भरहस्स संपइ-जिणवरा वंदे।
रयणत्तय-सत्थेणं, घोरकम्मवाहिणिं जयिदुं।।56।।
णमो रत्तकेस-चक्क-हत्थ-किदणाह परमेसराणं च।
सिरिसुमुत्ति-मुत्तिकंत-णिकेसि-पसत्थ-जिणिंदाणं।।57।।
णिराहार ममुत्तं च, दिजजिणं मेयोगदमरुजणाहं।
देवणाहं दयाहिग-पुप्फ-णरणाह-पडिभूदा य।।58।।

णागिंदं तवोहिगं, दसाणण-मारण्णग-दसाणीगा।
सत्तिगं जिणं वंदे, विणासिदुं भवपच्चयं हं।।59।।
पच्छिमधादगिस्स सय, भरहस्स खलु भावितित्थयर जिणा।
वसुगुणं च पप्पोदुं, णमंसामि तिजोगसुद्धीइ।।60।।
णमो सिरिसुमेरुणाह-जिणकिद-कइटभ-पसत्थदायगाण।
णिद्दमण-कुलयर-वड्ढमाण-अमियिंदु-जिणिंदाणं।।61।।
संखाणंदं च कप्प-किद-हरि-बहुस्स-भग्गवणाहा तह।
सुभद्दसामि-पविपाणि-विपोसिद-बंभचारी जिणा।।62।।
असक्खिग-चारित्तेस-णाह-पारिणामिग-सस्सदजिणा य।
णिहिं कउसिगणाहं च, धम्मेसं परियंदामि सय।।63।।
पच्छिमधादगीखंड-एरावदस्स अदीद-तित्थयरा।
परमोराल-सरीरं, लहिदुं पूयेमि तिजोगेण।।64।।
णमो साहिद-जिणसामि-थमितिंद-अच्चाणंद-जिणाणं च।
पुप्फोप्फुल्ल-जिणाणं-मंडिद-पहिद-मदणसिद्धाण।।65।।
हसदिंदं-चंदपास-अज्जबोह-जिणवल्लभ-णाहाणं।
सुविहूदिग-कुकुदभास-सुवण्णणाह-हरिवासगा य।।66।।
पियमित्त-धम्मदेवा पियरद-णंदिणाह-अस्साणीगा।
पुव्वं य पासणाहं, चित्तहिदयं दु परियंदामि।।67।।
पच्छिमधादगीखंड-एरावदस्स वट्टमाण-जिणा हु।
पणकल्लाणविहूदिं, लहिदु-मप्पविहूदिं वंदे।।68।।
णमो रविंदुजिण-सोमकुमार-पुढविवाण-कुलरयणाणं।
धम्म-सोम-वरुणणाह-अहिणंदण सव्वणाहाणं।।69।।
सुदिट्ठिं सिट्ठणाहं, सुधण्ण-सोमचंद-खेत्ताधीसा।
सदंतिगं च जयंतं, तमोरिउं णिम्मिददेवं च।।70।।

किदपासणाहं बोहिलाहं बहुणंदं सुदिट्ठिणाहं।
कंकुमणाभ-वक्खेसजिणा लहिदु-मुहयसिरि-महिणुमि।।71।।
पच्छिमधादगी खंड-एरावदस्स भावि-तित्थेसाण।
देहातीदं हविदुं, जुगपयपउमेसु णमंसामि।।72।।
णमो दमणिंदजिणवर-मुत्तसामि-विराग-पलंबजिणाण।
पुढविपदि-चारित्तणिहि-अवराजिद-सुबोहगाणं च।।73।।
बुद्धीसं वइतालिग-तिमुट्ठि-मुणिबोह-तित्थसामी तह।
धम्मधीसं धरणेस-पभव-अणाइदेवा य।।74।।
अणादिपहु-सव्वतित्थ-णिरुवमदेवा कउमारिगणाहं।
विहारग्गहं वंदे, धरणीसरं विगासदेवं।।75।।
पुव्वपुक्करद्धस्स हु, भरदस्स य भूदयाल-तित्थयरा।
णमामि विमलभावेण, अप्पविमलगुणं पप्पोदुं।।76।।
णमो जगण्णाह सामि-पभास-सरसामि-भरदेसजिणाण।
सिरिदिग्घाणण-जिणेस-विक्खादकित्ति-उवसाणीण।।77।।
पबोहं तवो पावग-तिपुरेसर-सउगदणाह-जिणिंदा।
वासवं मणोहरं च, सुहकम्मेस मिट्ठसेविदं।।78।।
विमलिंदं धम्मवास-पसादणाह-पहामिगंग-जिणा हु।
उज्झिदकलंगं फडिग-गजिंद-झाणजया पणमामि।।79।।
पुव्वपुक्करद्धस्स हु, भरदस्स य वट्टमाण-तित्थयरा।
भवसिंधुं णित्थरिदुं, संथुवमि गुणाणुरत्तीए।।80।।
णमो वसंदद्धय-जिण-तिजयंत-तित्थंभ-परबंभाणं।
अबालिस-पवादिणाह-भूमाणंद-तिणयणाणं च।।81।।
विद्दाणं परमप्पप्पसंगं भूमिंदं च गोसामिं।
कल्लाणप्पयासिदं, मंडल-महावसुदयवाणा।।82।।

दिव्वजोदि-पबोहेस-अभयंग-पमिद-दिव्वकारगाणं।
वदसामिं णिहाणं च, तिकम्मणाहं अहिणंदामि॥83॥
पुव्वपुक्करद्धस्स हु, भरदस्स भावि-तित्थयर-जिणिंदा।
तिसट्ठिकम्मं खयिदुं, लहिदुं अरिहपदं पणमामि॥84॥
णमो किदिणाहुवविट्ठ-देवाइच्च-अत्थाणिग-जिणाणं।
पचंद-वेसिग-तिभाणु-बंभ-वज्जंग-अविरोहीण॥85॥
अपावं लोकोत्तरं, जलहिसेस-विज्जोद-सुमेरुजिणा।
विभाविदं वच्छलं च, जिणालयं तुसारणाहं दु॥86॥
भुवणसामिं च सुकाम-देवाहिदेवाकारिमणाहं च।
बिंबिदणाहं वंदिय, कुव्वेमि गुणचिंतणं ताण॥87॥
पुव्वपुक्करद्धस्स हु, एरावदस्स अदीद-तित्थयरा।
देहातीदं होदुं, पणमणाणं लहिदुं णमामि॥88॥
णमो संकरक्खवास-णग्गाहिप-णग्गाहिपदीसाणं।
णट्ठपाखंड-जिणिंद-सिविणवेद-तवोधणाणं च॥89॥
पुप्फकेदुं धम्मिगं, चंदकेदु-मणुरत्त-वीयरागा।
उज्जोदं तमोपेक्ख-महुणाह-मरुदेव-दमजिणा॥90॥
उसहं सिलातणणाह-विस्स-महिंदा णंद-तमोहरा य।
बंभजणाहं दु परम-बंभं होदुं परियंदामि॥91॥
पुव्वपुक्करद्धस्स हु, एरावदस्स संपइ तित्थयरा।
णमंसामि भत्तीए, णिविट्टीए सव्वदोसाण॥92॥
णमो जसोहर-सुक्किद-अभयघोस-णिव्वाण-वदवासाण।
सिरि अदिरायस्सदेव-अज्जुण-तवच्चंद-सामीण॥93॥
सारीरिगं महेसं, सुग्गीवं दिढपहारंबरीगं।
दयादीदं तुंबरं, सव्वसीलं तह पडिजादं॥94॥

जिदिंदियं तवाइच्च-रयणायर-देवेस-लंछणजिणा।
सुप्पदेसणाह-मप्प-पदेसाण सुद्धीइ वंदे॥95॥
पुव्वपुक्करद्धस्स हु, एरावदस्स हु भावितित्थयरा।
सधम्मलद्धीइ थुवमि, रयणत्तयफलं पप्पोदुं॥96॥
णमो पउमचंदसामि-रयणंगजोगिकेस-सव्वत्थाण।
रिसि-हरिभद्द-गुणाहिव-पारत्तिग-बंभ-मुणिंदाण॥97॥
सिरिदीवग-राजरिसी, विसाह-माणिंदिदं रविसामिं च।
सोमदत्त-जयसामी, मोक्खणाहं अग्गभासं दु॥98॥
धणुस्संग-मुत्तिणाह-रोमंचग-पसिद्ध-जिदेससामी।
णियजिणत्तं पाविदुं, मोहारिं जयिदुं पणमामि॥99॥
पच्छिमपुक्करद्धस्स, भरदस्स जिणा अदीद-तित्थयरा।
भवसिंधुतीर-लहिदुं, सिद्धिसदणं वासिदुं थुवमि॥100॥
णमो हु सव्वंगसामि-पउमायर-पहायर-बलणाहाण।
जोगीसरणाहस्स य, सुहुमंग-वयचलादीदाण॥101॥
कलंबगं परिचागं, णिसेहगं तहा पावावहारिं च।
सुसामिं मुत्तिचंदं अप्पासिग-जयचंद-मलाहारी॥102॥
सुसंजदं-मलयसिंधु-मक्खधरं देवधरं देवगणं।
आगमिग-विणीद-रदाणंदा य परियंदामि सया॥103॥
पच्छिमपुक्करद्धस्स, भरदस्स संपइ-तित्थयरजिणा हु।
चउविहकम्मं डहिदुं, अप्पसत्तिं फुरिदुं णमामि॥104॥
णमो दु पहावगदेव-विणदेंद-सुहावग-दिणयराणं च।
अणंगतेज-धणदत्त-पउरव-जिणदत्त-जिणाणं च॥105॥
पासं मुणिसिंधुं तह, अत्थिगं भवाणीगं णिवणाहं।
णारायणं पसमोग-भूपइ-सुदिट्ठि-भवभीरू य॥106॥

णंदणं भग्गव-सुवसु-परावस-वणवासिग-भरदेसा य।
अच्चेमि वसुदव्वेहि, इंदाइ-पुण्णपदं लहिदुं।।107।।
पच्छिमपुक्करद्धस्स, भरदस्स भावि-तित्थयर-जिणेसा।
सव्वोदयिगभावं च, णासिदुं अहिवंदामि सया।।108।।
णमो उवसंत-फग्गुण-पुव्वास-सोधम्म-गोरिग-जिणाण।
तिविक्कम-णरसीह-मिगवसु-सोम-सुहासुराणं तह।।109।।
अपावमल्ल-विवाधा, संधिगं मंधत्तं अस्सतेजं।
विज्जाहरं सुलोयण-मोणणिही तह पुंडरीगं।।110।।
चित्तगणं-मणिरिंदं, सव्वकालं भूरिसवण-जिणिंदं।
पुण्णोगं दु उक्किट्ठ-पुण्णं लहेदुं णमामि सय।।111।।
पच्छिमपुक्करद्धस्स, एरावदस्स अदीद-तित्थयरा।
सादिणंतसहावं च, णियचित्ते फुरिदुं संथुवमि।।112।।
णमो गंगेयग-णल्लवासव-भीम-दयाहिग-सुभद्दाण।
सामि-हणिग-णंदिघोस-रूवबीय-वज्जणाहाणं।।113।।
संतोसं च सुधम्मं, फणीसर-वीरचंद-मेहाणिगा।
सच्छंदं कोवक्खय-मकामं सया धम्मधामं।।114।।
सुत्तिसेण-खेमंकर-दयाणाह-कित्तिव-सुहंकरा तह।
वसुविहकम्मक्खयिदुं, पणमामि सगप्पलद्धीए।।115।।
पच्छिमपुक्करद्धस्स, एरावदस्स संपइ-तित्थयरा।
परियंदामि सव्वदा, आरोहेदुं खवगसेणिं।।116।।
णमो हु अदोसिग-उसह-विणयाणंद-मुणिभारद-जिणाणं।
सिरि-इंदग-चंदकेदु-धयाइच्च-वसुबोहगाणं।।117।।
मुत्तिगदं धम्म बोह-देवंग-मारीचिग-तित्थेसा य।
सुजीवणं जसोहरं, गोदमं मुणिसुद्धिं णिच्चं।।118।।

पबोहिगं सदाणीग-चारित्त-सयाणंदा-वेदत्थं च।
सुहाणीग-जोदिम्मुह-सुरद्धा अहिणुमिं भत्तीइ॥119॥
पच्छिम-पुक्करद्धस्स, एरावदस्स भावितित्थेसा य।
जिणधम्मप्पवट्टगा, तिलोयपुज्जा पत्थेमि हं॥120॥
जे तित्थयर-पदेसुं, पणमंते परमभत्ति-भावेहिं।
सोक्खं ते भवसिंधुं, भत्ति-पचंड-रविकिरणेहिं॥121॥
जो को वि सुहभावेहि, पढदि वीसुत्तर-सत्तसय-णामं।
सुणेदि चिंतदि सुमरदि ताण खयंति सव्वपावाणि॥122॥
तित्थयर-णाम-थुदिं हु, तियाले सिमरंति जे के वि भवी।
पणकल्लाणविहूदिं, भुंजंतो लहंति सिवं ते॥123॥
वसुकम्माणि णासिदुं, वसुगुणं वसुपुढविं लहिदुं थुवमि।
वसुयामे वसुणंदी सूरी सय वसुपाडिहेरं॥124॥

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108

वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा

रचित व संपादित साहित्य

मौलिक कृतियाँ

प्राकृत साहित्य

1. प्राकृत वाणी भाग-1, 2, 3
2. अहिंसगाहारो (अहिंसक आहार)
3. अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
4. अणुवेक्खा-सारो (अनुप्रेक्षा सार)
5. जिणवर-थोत्तं (जिनवर स्तोत्र)
6. जदि-किदि-कम्मं (यति कृतिकर्म)
7. णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
8. णिग्गंथ-थुदी (निर्ग्रन्थ स्तुति)
9. तच्चसारो (तत्त्व सार)
10. धम्म-सुत्तं (धर्म सूत्र)
11. रट्ठ-संति-महाजण्णो (राष्ट्र शांति महायज्ञ)
12. सुद्धप्पा (शुद्धात्मा)
13. अप्पणिब्भर भारदो (आत्मनिर्भर भारत)
14. विज्जा-वसु-सावयायारो (विद्या वसु श्रावकाचार)
15. अप्प-विहवो (आत्म वैभव)
16. अट्ठंग जोगो (अष्टांग योग)
17. णमोयार महप्पुरो (णमोकार माहात्म्य)
18. मूल-वण्णो (मूल वर्ण)
19. मंगल-सुत्तं (मंगल सूत्र)
20. विस्स-धम्मो (विश्व धर्म)
21. विस्स-पुज्जो-दियंबरो (विश्व पूज्य दिगम्बर)
22. समवसरण सोहा (समवशरण शोभा)
23. वयण-पमाणत्तं (वचन प्रमाणत्व)
24. अप्पसत्ती (आत्म शक्ति)
25. कला-विण्णाणं (कला विज्ञान)
26. को विवेगी (विवेकी कौन)
27. पुण्णासव-णिलयो (पुण्यास्रव निलय)
28. तित्थयर-णामत्थुदी (तीर्थंकर नाम स्तुति)
29. रयणकंडो (सूक्ति कोश)
30. धम्म-सुत्ति-संगहो (धर्म सूक्ति संग्रह)
31. कम्म-सहावो (कर्म स्वभाव)
32. खवगराय सिरोमणी (क्षपकराज शिरोमणि)
33. सिरि सीयलणाह चरियं (श्री शीतलनाथ चरित्र)
34. अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)
35. समणायारो (श्रमणाचार)

भावार्थ

1. अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
2. णिग्गंथ-थुदि (निर्ग्रंथ स्तुति)
3. तच्च-सारो (तत्त्वसार)
4. रट्ठसंति-महाजण्णो (राष्ट्रशांति महायज्ञ)
5. णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)

टीका ग्रंथ

1. प्रमेया टीका-रत्नमाला (संस्कृत)
2. वसुधा टीका-द्रव्यसंग्रह (संस्कृत)
3. नय प्रबोधिनी-आलाप पद्धति (हिंदी)

इंग्लिश साहित्य

Inspirational Tales Part- 1 & 2

वाचना साहित्य

1. मुक्ति का वाग्दान (इष्टोपदेश)
2. बोधि वृक्ष (प्रश्नोत्तर रत्नमालिका)
3. शिवपथ का रथ (सामायिक पाठ)
4. स्वात्मोपलब्धि (समाधि तंत्र)

प्रवचन साहित्य

1. आईना मेरे देश का
2. उत्तम क्षमा धर्म (आत्मा का ए.सी. रूम)
3. उत्तम आर्जव धर्म (रंचक दगा बहुत दु:खदानी)
4. उत्तम मार्दव धर्म (मान महाविष रूप)
5. उत्तम शौच धर्म (लोभ पाप का बाप बखाना)
6. उत्तम सत्य धर्म (सतवादी जग में सुखी)
7. उत्तम संयम धर्म (जिस बिना नहिं जिनराज सीझे)
8. उत्तम तप धर्म (तप चाहे सुरराय)
9. उत्तम त्याग धर्म (निज हाथ दीजे साथ लीजे)
10. उत्तम आकिंचन धर्म (परिग्रह चिंता दु:ख ही मानो)
11. उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म (चेतना का भोग)
12. खुशी के आँसू
13. खोज क्यों रोज-रोज
14. गुरुत्तं भाग 1-15
15. चूको मत
16. जय बजरंगबली
17. जीवन का सहारा
18. ठहरो! ऐसे चलो
19. तैयारी जीत की
20. दशामृत
21. धर्म की महिमा
22. ना मिटना बुरा है न पिटना
23. नारी का धवल पक्ष
24. शायद यही सच है
25. श्रुत निर्झरी
26. सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की शौर्य गाथा
27. सीप का मोती (महावीर जयंती)
28. स्वाती की बूँद

हिंदी गद्य रचना

1. अन्तर्यात्रा
2. अच्छी बातें
3. आज का निर्णय
4. आ जाओ प्रकृति की गोद में
5. आधुनिक समस्यायें प्रमाणिक समाधान
6. आहारदान
7. एक हजार आठ
8. कलम पट्टी बुद्धिका
9. गागर में सागर
10. गुरु कृपा
11. गुरुवर तेरा साथ
12. जिन सिद्धांत महोदधि
13. डॉक्टरों से मुक्ति
14. दान के अचिन्त्य प्रभाव
15. धर्म बोध संस्कार (भाग 1-4)
16. धर्म संस्कार (भाग 1-2)
17. निज अवलोकन
18. वसु विचार
19. वसुनन्दी उवाच
20. मीठे प्रवचन (भाग 1-6)
21. रोहिणी व्रत कथा
22. स्वप्न विचार
23. सद्गुरु की सीख
24. सफलता के सूत्र
25. सर्वोदयी नैतिक धर्म
26. संस्कारादित्य
27. हमारे आदर्श

हिंदी काव्य रचना

1. अक्षरातीत
2. कल्याणी
3. चैन की जिंदगी
4. ना मैं चुप हूँ ना गाता हूँ
5. मुक्ति दूत के मुक्तक
6. हाइकू
7. हीरों का खजाना

विधान रचना

1. कल्याण मंदिर विधान
2. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
3. चौसठऋद्धि विधान
4. णमोकार महार्चना
5. दु:खों से मुक्ति (बृहद् सहस्रनाम महार्चना)
6. यागमंडल विधान
7. समवशरण महार्चना
8. श्री नंदीश्वर विधान
9. श्री सम्मेदशिखर विधान
10. श्री अजितनाथ विधान
11. श्री संभवनाथ विधान
12. श्री पद्मप्रभ विधान
13. श्री चंद्रप्रभ विधान (देहरा तिजारा)
14. श्री चंद्रप्रभ विधान
15. श्री पुष्पदंत विधान
16. श्री शांतिनाथ विधान
17. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
18. श्री नेमिनाथ विधान
19. श्री महावीर विधान
20. श्री जम्बूस्वामी विधान
21. श्री भक्तामर विधान
22. श्री सर्वतोभद्र महार्चना

संपादित कृतियाँ (संस्कृत प्राकृत साहित्य

1. आराधना सार (श्रीमदेवसेनाचार्य जी)
2. आराधना समुच्चय (श्री रविचन्द्राचार्य जी)
3. आध्यात्म तरंगिणी (आचार्य सोमदेव सूरी जी)
4. कर्म विपाक (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5. कर्म प्रकृति (सिद्धांत चक्रवर्ती आ. श्री अभयचंद्र जी)
6. गुणरत्नाकर (रत्नकरण्ड श्रावकाचार) (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
7. चार श्रावकाचार संग्रह
8. जिनकल्पि सूत्र (श्री प्रभाचंद्राचार्य जी)
9. जिन श्रमण भारती (संकलन-भक्ति, स्तुति, ग्रंथादि)
10. जिन सहस्रनाम स्त्रोत
11. तत्त्वार्थ सार (श्री मदमृताचन्द्राचार्य सूरि)
12. तत्त्वार्थस्य संसिद्धि
13. तत्त्वार्थ सूत्र (आ. श्री उमास्वामी जी)
14. तत्त्वज्ञान तरंगिणी (श्री मद्भट्टारक ज्ञानभूषण जी)
15. तच्च वियारो सारो (आ. श्री वसुनंदी जी)
16. तत्व भावना (आ. श्री अमितगति जी)
17. धर्म रत्नाकर (श्री जयसेनाचार्य जी)
18. धम्म रसायण (आ. श्री पद्मनंदी स्वामी जी)
19. ध्यान सूत्राणि (श्री माघनंदी सूरी)
20. नीतिसार समुच्चय (आ. श्री इंद्रनंदी स्वामी जी)
21. पंच विंशतिका (आ. श्री पद्मनंदी जी)
22. प्रकृति समुत्कीर्तन (सिद्धांत चक्रवर्ती श्री नेमीचंद्राचार्य जी)
23 पंचरत्न
24. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय (आ. श्री अमृतचंद्र स्वामी जी)
25. मरणकण्डिका (आ. श्री अमितगति जी)
26. भगवती आराधना (आ. श्री शिवकोटी जी स्वामी)
27. भावत्रयफलप्रदर्शी (आ. श्री कुंथुसागर जी)
28. मूलाचार प्रदीप (आ. श्री सकलकीर्ति स्वामी जी)
29. योगामृत (भाग 1-2) (मुनि श्रीबालचंद्र जी)
30. योगसार (भाग 1, 2) (मुनि श्री बालचंद्र जी)
31. रयणसार (आ. श्री कुंदकुंद स्वामी)
32. वसुऋद्धि
    - रत्नमाला (आ. श्री शिवकोटि स्वामी जी)
    - पूज्यपाद श्रावकाचार (आ. श्री पूज्यपाद जी)
    - लघु द्रव्य संग्रह (आ. श्री नेमीचंद्र स्वामी जी)
    - अर्हत प्रवचनम् (आ. श्री प्रभाचंद्र स्वामी जी)
    - स्वरूप संबोधन (आ. श्री अकलंक देव जी)
    - इष्टोपदेश (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
    - वैराग्यमणि माला (आ. श्री विशाल कीर्ति जी)
    - ज्ञानांकुश (आ. श्री योगीन्द्र देव)
33. सुभाषित रत्न संदोह (आ. श्री अमितगति स्वामी जी)
34. सिन्दूर प्रकरण (आ. श्री सोमदेव स्वामी जी)
35. समाधि तंत्र (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
36. समाधि सार (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
37. सार समुच्चय (आ. श्री कुलभद्र स्वामी जी)
38. विषापहार स्तोत्र (महाकवि धनंजय जी)

प्रथमानुयोग साहित्य

1. अमरसेन चरित्र (कविवर माणिक्कराज जी)
2. आराधना कथा कोष (ब्र. श्री नेमीदत्त जी) (भाग 1-2-3)
3. करकण्डु चरित्र (मुनि श्री कनकामर जी)
4. कोटिभट श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5. गौतम स्वामी चारित्र (मण्डलाचार्य श्री धर्मचंद्र जी)
6. चारूदत्त चरित्र (ब्र. श्री नेमीदत्त जी)
7. चित्रसेन पद्मावती चरित्र (पं. पूर्णमल्ल जी)
8. चेलना चारित्र
9. चंद्रप्रभ चरित्र
10. चौबीसी पुराण
11. जिनदत्त चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
12. त्रिवेणी (संग्रह ग्रंथ)
13. देशभूषण कुलभूषण चरित्र
14. धर्मामृत (भाग 1-2) (श्री नयसेनाचार्य जी)
15. धन्यकुमार चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
16. नागकुमार चरित्र (आ. श्री मल्लिषेण जी)
17. नंगानंग कुमार चरित्र (श्रीमान् देवदत्त)
18. प्रभंजन चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
19. पाण्डव पुराण (श्री मदाचार्य शुभचंद्र देव)
20. पार्श्वनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
21. पुण्याश्रव कथा कोष (भाग 1-2) (श्री रामचंद्र मुमुक्षु)
22. पुराण सार संग्रह (भाग 1-2) (आ. श्री दामनंदी जी)
23. भरतेश वैभव (कवि रत्नाकर)
24. भद्रबाहु चरित्र
25. मल्लिनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
26. महीपाल चरित्र (कविवर श्री चारित्र भूषण)
27. महापुराण (भाग 1-2)
28. महावीर पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
29. मौनव्रत कथा (आ. श्री श्रीचंद्र स्वामी जी)
30. यशोधर चरित्र
31. रामचरित्र (भाग 1-2) (आ. श्री सोमदेव स्वामी)
32. रोहिणी व्रत कथा
33. व्रत कथा संग्रह
34. वरांग चरित्र (आ. श्री जटासिंह नंदी)
35. विमलनाथ पुराण (श्री ब्रह्मचारीश्वर कृष्णदास जी)
36. वीर वर्धमान चरित्र
37. श्रेणिक चरित्र
38. श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
39. श्री जम्बूस्वामी जी चरित्र (श्री वीर कवि)
40. शांतिनाथ पुराण (भाग 1-2) (कवि असग जी)
41. सप्तव्यसन चरित्र (आ. श्री सोमकीर्ति भट्टारक)
42. सम्यक्त्व कौमुदी
43. सती मनोरमा
44. सीता चरित्र (श्री दयाचंद गोलीय)
45. सुरसुंदरी चरित्र
46. सुलोचना चरित्र
47. सुकुमाल चरित्र
48. सुशीला उपन्यास
49. सुदर्शन चरित्र (पं. गोपालदास बैरया)
50. सुभौम चरित्र
51. हनुमान चरित्र
52. क्षत्र चूड़ामणि (जीवंधर चरित्र)

संपादित हिंदी साहित्य

1. अरिष्ट निवारक त्रय विधान
   - नवग्रह विधान
   - वास्तु निवारण
   - मृत्युंजय (पं. आशाधर जी कृत)
2. श्री जिनसहस्त्रनाम एवं पंचपरमेष्ठी विधान
3. श्री जिनसहस्त्रानाम विधान (लघु) आदि एक नाम अनेक
4. शाश्वत शांतिनाथ ऋद्धि विधान
   - भक्तामर विधान (आ. मानतुंग स्वामी जी (मूल))
   - शांतिनाथ विधान (पं. ताराचंद्र जी)
   - सम्मेदशिखर विधान (पं. जवाहर दास जी)
5. कुरल काव्य (संत तिरुवल्लुवर)
6. तत्त्वोपदेश (छहढ़ाला) (पुं. प्रवर दौलतराम जी)
7. दिव्य लक्ष्य (संकलन-हिंदी पाठ, स्तुति आदि)
8. धर्म प्रश्नोत्तर (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
9. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
10. भक्तिसागर (चौबीसी चालीसा संग्रह)
11. विद्यानंद उवाच (आ. श्री विद्यानंद जी मुनिराज)
12. सुख का सागर (चौबीसी चालीसा)
13. संसार का अंत
14. स्वास्थ्य बोधामृत

गुरु पद विनयांजली साहित्य

1. अक्षर शिल्पी (मुनि शिवानंद)
2. पगवंदन (मुनि शिवानंद प्रशमानंद)
3. वसुनंदी प्रश्नोत्तरी (मुनि जिनानंद, ऐ. विज्ञान सागर)
4. दृष्टि दृश्यों के पार (आ. श्री वर्धस्वनंदनी, वर्चस्वनंदनी)
5. स्मृति पटल से भाग 1-2 (आ. श्री वर्धस्वनंदनी)
6. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी (ऐलक विज्ञान सागर)
7. गुरु आस्था (ऐलक विज्ञान सागर)
8. परिचय के गवाक्ष में (ऐलक विज्ञान सागर)
9. स्वर्णोदय (ऐलक विज्ञान सागर)
10. स्वर्ण जन्मजयंती महोत्सव (ऐलक विज्ञान सागर)
11. हस्ताक्षर (ऐलक विज्ञान सागर)
12. वसु सुबंध (महाकाव्य) (प्रो. डॉ. उदयचंद्र जी जैन)
13. समझाया रविन्दु न माना (सचिन जैन 'निकुंज')